भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

अक्तूबर 2022 – मार्च 2023
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका, अंक – 14

नव प्रभा

-: बीईएल कार्पोरेट कार्यालय की गृह पत्रिका :-

हिंदी - राजभाषा से विश्वभाषा

दृष्टि, ध्येय, मूल्य और उद्देश्य

दृष्टि

पेशेवर इलेक्ट्रॉनिकी में विश्व–स्तरीय उद्यम बनना।

ध्येय

रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी और पेशेवर इलेक्ट्रॉनिकी के अन्य चुने हुए क्षेत्रों में गुणता, प्रौद्योगिकी और नवीनता के जरिए ग्राहक–केन्द्रित, वैश्विक प्रतिस्पर्धी कंपनी बनना।

मूल्य

- ग्राहक को सर्वोपरि रखना।
- पारदर्शिता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से कार्य करना।
- व्यक्तियों पर विश्वास करना और उनका सम्मान करना।
- टीम भावना को पोषित करना।
- अत्यधिक कर्मचारी – संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास करना।
- लोचता और नवीनता को प्रोत्साहित करना।
- अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करने का प्रयत्न करना।
- संगठन का हिस्सा होने पर गर्व होना।

उद्देश्य

- गुणता, सुपुर्दगी और सेवा की मांगों को पूरा करते हुए अत्याधुनिक उत्पादों व समाधानों को प्रतिस्पर्धी कीमतों में प्रदान करते हुए ग्राहक–केन्द्रित कंपनी बनना।
- लाभप्रद विकास हेतु आंतरिक संसाधनों को सृजित करना।
- संस्थागत अनुसंधान व विकास, रक्षा / अनुसंधान प्रयोगशालाओं तथा शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझेदारी के जरिए रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी में प्रौद्योगिकीय नेतृत्व हासिल करना।
- निर्यात पर जोर देना।
- लोगों के लिए सतत् शिक्षण व टीम–कार्य के जरिए उनकी पूरी क्षमता को प्राप्त कराने हेतु सुविधापूर्ण परिवेश सृजित करना।
- ग्राहकों को उनके धन का पूरा प्रतिफल प्रदान करना और शेयरधारकों हेतु संपदा सृजित करना।
- कंपनी के निष्पादन को अंतर्राष्ट्रीय रूप से सर्वोत्कृष्ट श्रेणी के साथ सतत् रूप से निर्देश–चिह्नित करना।
- विपणन क्षमताओं को वैश्विक मानकों तक बढ़ाना।
- स्वदेशीकरण के माध्यम से आत्म–निर्भरता का प्रयत्न करना।

विषय–सूची

01 हिंदी – राजभाषा से विश्वभाषा (देवराज) —— 01
02 जनप्रिय हिंदी (नेहा चांवरिया) – कविता —— 03
03 वैश्विक स्तर पर हिंदी की दशा और दिशा (डॉ. रहिला राज के एम) —— 04
04 हिंदी – देश से विदेश तक (अभिषेक कुमार) —— 07
05 मां (रंजीत करमचंदानी) – कविता —— 08
06 हिंदी – देशव्यापी से विश्वव्यापी (नितेश तिवारी) —— 09
07 विश्वभाषा बनती हिंदी (अंशु मोहन) – कविता —— 11
08 अमीर कौन? (शिवकुमार) – कहानी —— 12
09 अंतरराष्ट्रीय पटल पर हिंदी (ऋचा रावत) —— 13
10 बंधन (किरण मनोहर देठे) – कहानी —— 15
11 डिजिटल युग में हिंदी भाषा की वैश्विक पहचान (ऋतु लाम्बा) —— 23
12 विश्व भाषा के रूप में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता (श्यामलाल दास) —— 25
13 वर्तमान परिदृश्य में रक्षा उत्पादों का निर्यात (श्यामसुंदर झा) —— 27
14 राजभाषा बने राष्ट्रभाषा, हिंसा नहीं हैं कोई हल (ममता रानी) – कविता —— 29
15 खेल जगत में भारत का बढ़ता पायदान (केता शिवा) —— 30
16 देश दुनिया में हिंदी का वर्चस्व (अंशु मोहन) —— 32
17 वर्ग पहेली —— 35
18 राजभाषा गतिविधियां —— 37
19 हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें —— 50
20 साहित्यकार परिचय – महादेवी वर्मा —— 52

राजभाषा दृष्टि
RAJBHASHA VISION

संस्थान के कार्यकलाप के हर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी को सरल रूप में अपनाना।

To adopt Official Language Hindi in every sphere of activity of the Company in its simple form

राजभाषा ध्येय
RAJBHASHA MISSION

प्रतिबद्धता, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिंदी में मूल कार्य करने की संस्कृति को आत्मसात करना और राजभाषा हिंदी को मौखिक, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में अपनाना।

To imbibe a culture of doing original work in Hindi through Commitment, Motivation and Incentive and to adopt Rajbhasha Hindi as the spoken, written and electronic medium of communication.

संदेश

हिंदी जनमानस की अभिव्यक्ति, उनके प्रेम और सौहार्द की भाषा है । इसके विभिन्न रंग हैं, जब यह केन्द्र सरकार की कामकाजी भाषा या राजभाषा के रूप में प्रयुक्त होती है तो स्पष्ट, शिष्ट और संस्कृतनिष्ठ रूप में दिखती है। जब साहित्य में ढलती है तो छंद, रस और अलंकारों से युक्त प्रखर और शब्दों की धनी भाषा बन जाती है। जब उत्तर से दक्षिण भारत तक वहां के लोगों द्वारा बोली जाती है तो उस क्षेत्र की स्थानीयता और सभ्यता–संस्कृति के रंग में घुल–मिल कर विशेष अंदाज़ में बोली जाती है और एकता के प्रतीक के रूप में पूरे भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

जमाना कंप्यूटर का है और भाषा के क्षेत्र में रोज नई–नई प्रौद्योगिकी विकसित की जा रही है। सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए आज हमारे पास एक से बढ़कर एक टूल उपलब्ध हैं। हमें इन टूल का उपयोग कर तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी को समृद्ध बनाना है। हम राजभाषा विभाग द्वारा विकसित साफ्टवेयर, मशीन अनुवाद टूल कंठस्थ आदि का प्रयोग कर हिंदी पत्राचार को बढ़ा सकते हैं। भारत इलेक्ट्रॉनिक्स की गृह–पत्रिका **'नवप्रभा'** भी इसी रूप में विशेष है, क्योंकि भारत भर में स्थित इसकी यूनिटों और कार्यालयों के कर्मचारी अपनी कल्पना और सोच को अपने रचित लेखों के माध्यम से हम तक पहुंचाते हैं। भिन्न–भिन्न विषयों पर लिखी ये रचनाएं **'नवप्रभा'** में गुलदस्ते का रूप ले लेती हैं।

"हिंदी – राजभाषा से विश्वभाषा" विषय पर केंद्रित **'नवप्रभा'** के चौदहवें अंक के प्रकाशन पर मैं सभी को शुभकामनाएं देता हूं। हिंदी विश्व भाषा बन सके, व्यापार और अर्थ जगत की भाषा बन सके, सूचना क्रांति में वह दुनिया की अन्य महत्वपूर्ण भाषाओं के समकक्ष खड़ी हो सके, इसके लिए हिंदी को अधिक सक्षम बनाना होगा। पत्रिका में अपना योगदान देने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मेरी शुभकामनाएं।

जयहिंद, जय हिंदी।

भानु प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भानु प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक
अध्यक्ष

मनोज जैन
निदेशक (मानव संसाधन)
उपाध्यक्ष

रामन आर
महाप्रबंधक (आं.ले.प.)
सदस्य

हरिकुमार आर
महाप्रबंधक (टी. पी.)
सदस्य

केशव राजू एच एस
अ.म.प्र. (सतर्कता)
सदस्य

दिब्येंदु बिद्यांत
स्थानापन्न महाप्रबंधक (एच. आर.)
सहयोजित सदस्य

रमा एस
स्थानापन्न महाप्रबंधक (वित्त)
सदस्य

मनोज यादव
अ.म.प्र. (एम.एस.)

श्रीनिवास राव एच पी
अ.म.प्र. (एस.पी.)
सदस्य

संजीव एन देशपांडे
व.उ.म.प्र. (सी.सी)
सदस्य

श्रीनिवास एस
कंपनी सचिव
सदस्य

नीरज कुमार चड्ढा
प्रबंधक (लाइसेंसिंग)
सदस्य

श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)
सदस्य सचिव

संदेश

भाषा संप्रेषण का माध्यम है। वही भाषा संप्रेषण का सशक्त माध्यम बन सकती है जो मानवीय भावनाओं को अच्छी तरह व्यक्त करती हो। इस दृष्टि से हमारी सभी भारतीय भाषाएं पूरी तरह सक्षम हैं। हिंदी का प्रयोग तो पूरे देश में संपर्क भाषा के रूप में सदियों से किया जा रहा है। राजभाषा का दर्जा देकर हिंदी की इसी ताकत को मान्यता दी गई।

सरकारी दफ्तरों में हिंदी की स्थिति दशक–दर–दशक बेहतर हो रही है। थोड़ा है, थोड़े की ज़रूरत है। यानी अब भी हिंदी के नई ऊचाइंयों पर पहुंचने की पूरी संभावना है। हम सब के थोड़े–थोड़े प्रयास मिलकर सामूहिक रूप से हिंदी की स्थिति को बेहतर कर सकते हैं। इसके लिए हमें जहां तक हो सके, सरल और आसान हिंदी का इस्तेमाल करना होगा। ऐसी हिंदी लिखी जाए जैसी बोली जाती है, जो सरल हो, मीठी हो और सुनने पढ़ने वाले को आसानी से समझ आए। कहते भी हैं कि 'करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' यदि हिंदीतर भाषी भी आसान हिंदी के आसान और छोटे–छोटे शब्दों का प्रयोग रोजाना करना शुरू करेंगे तो निश्चित रूप से हिंदी का प्रचार बढ़ेगा। हिंदी के साथ–साथ हमें अपनी मातृभाषा का भी समान रूप से प्रयोग करना चाहिए क्योंकि जो अपनी मातृभाषा की इज़्जत करते हैं, दुनिया उनकी इज़्जत करती है।

यह तो हुई हिंदी में बात करने और समझने की बात। इसी तरह हमें हिंदी पढ़ने का भी अभ्यास नियमित रूप से करना चाहिए। हिंदी में इतनी स्तरीय सामग्री उपलब्ध है कि आप अपने मनचाहे विषय की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसी क्रम में, हमारी कार्पोरेट हिंदी गृह पत्रिका **'नवप्रभा'** का चौदहवां अंक आपके सामने है जो **"हिंदी – राजभाषा से विश्वभाषा"** विषय पर आधारित है। पत्रिका की सफलता के लिए इससे जुड़े सभी लोगों को मेरी शुभेच्छाएं।

जयहिंद, जय हिंदी।

मनोज जैन
निदेशक
(मानव संसाधन)

बीईएल के राजभाषा अधिकारीगण

श्रीनिवास राव
कॉर्पोरेट कार्यालय

एच एल गोपालकृष्णा
बेंगलूरु कामप्लेक्स

वी सुरेश कुमार
हैदराबाद

बिमल मोहन सिंह रावत
नवी मुंबई, पुणे

श्यामलाल दास
चेन्नै

रजनी साव
सी आर एल बेंगलूरु

अनीश चौहान
पंचकुला

नवजोत पीटर
गाजियाबाद

माधुरी रावत
कोटद्वार

दिनेश उईके
मछिलिपट्नम

संदेश

आज का समय भूमंडलीकरण का है जिसका असली चेहरा बाज़ार के रूप में हमारे सामने उपस्थित हुआ है। तेजी से फैलती बाज़ार की संस्कृति ने हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, खानपान, पहनावा, भाषा, संस्कृति आदि को प्रभावित किया है। बच्चों के सपनों तक में बाज़ार का प्रवेश हो चुका है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने विज्ञापनों को जन्म दिया, जिससे न केवल हिंदी का प्रयोग बढ़ा बल्कि युवाओं को रोजगार के नए अवसर भी मिले। बहुराष्ट्रीय कंपनियां इस बात को बखूबी जानती हैं कि भारत उनके उत्पाद का बड़ा बाज़ार है और यहां के ज्यादातर उपभोक्ता हिंदीभाषी हैं। यानी आज हिंदी केंद्र सरकार की राजभाषा ही नहीं वरन विश्व भाषा बनने की ओर है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए कार्पोरेट हिंदी पत्रिका **नवप्रभा** का 14वां अंक प्रबुद्ध पाठकों के लिए **"हिंदी – राजभाषा से विश्वभाषा"** पर प्रकाशित किया गया है।

इस अंक में पाठकों के ज्यादातर पर लेख, कविता आदि को यथासंभव इसी विषय शामिल किया गया है। कंपनी भर में आयोजित विभिन्न राजभाषा गतिविधियां, हिंदी माह, कार्यशालाएं, बैठकें, निरीक्षण रिपोर्ट आदि सहित वर्ग पहेली, साहित्यकार परिचय, हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें आदि जैसे स्थायी स्तंभों को शामिल कर इसे यथासंभव रोचक और ज्ञानवर्धन बनाने की कोशिश की गई है।

नवप्रभा के प्रकाशन के शुभ अवसर पर हिंदी में कामकाज करने के आह्वान के साथ पत्रिका से जुड़े सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

जयहिंद, जय हिंदी।

दिब्येंदु बिद्यांत
स्थानापन्न महाप्रबंधक
(मानव संसाधन)

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
कार्पोरेट कार्यालय

नव प्रभा अंक–14
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका

(केवल निजी वितरण के लिए)

मार्गदर्शन
श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षण
श्री मनोज जैन
निदेशक (मानव संसाधन)

परामर्श
श्री दिब्येंदु बिद्यांत
अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन
श्री श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
डॉ. रहिला राज के.एम.
कनिष्ठ अनुवादक

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं, बीईएल से इसकी सहमति अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय...

उसे गुमां है कि मेरी उड़ान कुछ कम है,
मुझे यकीं है कि ये आसमान कुछ कम है।

यूं तो हिंदी लगभग चालीस प्रतिशत भारतीयों की भाषा है लेकिन इसकी वैश्विक उपस्थिति और व्यावहारिक प्रगति पिछले दो दशकों में पहले की अपेक्षा दोगुनी से भी अधिक हुई है। विश्व पटल पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बढ़ते कद और उनके हिंदी प्रबोधनों व संबोधनों ने विश्व भर के अहिंदीभाषियों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। हिंदी में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की वह सुगंध समाई हुई है जिसके आकर्षण में संपूर्ण विश्व शांति का अनुभव करता है।

हिंदी के साथ आज अस्तित्व का कोई संकट नहीं है क्योंकि यह भारत के साथ–साथ विश्व में करोड़ों की अनुराग भाषा है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी का प्रचलन है और वहां के प्रवासी भारतीय हिंदी की सुरक्षा और प्रतिष्ठा के लिए पूरी तरह सजग और सचेष्ट हैं। भारत में हर प्रांत की अपनी–अपनी भाषा है लेकिन पूरे राष्ट्र की संवाद भाषा हिंदी ही है। हिंदी न केवल संख्या बल बल्कि भू–विस्तार की दृष्टि से भी विश्व की प्रधान भाषाओं में से एक है और इसके बोलने वालों की संख्या विश्व में 70 करोड़ बताई गई है और नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बर्मा, फ़िजी, मारीशस, सूरीनाम व दक्षिण अफ्रीका में बसे प्रवासी भारतीयों द्वारा हिंदी बोली जाती है जो इन देशों के स्थायी नागरिक हैं और अपनी मातृभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है "हिंदी भाषा लाखों–करोड़ों के सुख–दुख, आशा–आकांक्षा को अभिव्यक्ति देने वाली ऐसी लोकभाषा है जो पराधीनता के बंधन काटते–काटते बड़ी हुई, संघर्ष में ही जन्मी और संघर्ष में ही शक्ति संचय करती रही।" यही संचित शक्ति अब अपना प्रभाव दिखा रही है। भारत जैसे–जैसे शक्तिशाली बनेगा, भारत की भाषा का भी सम्मान होगा और लोग उसकी ओर झुकेंगे।

नवप्रभा के इस अंक में हिंदी के राजभाषा से लेकर विश्व भाषा के सफर पर विमर्श करने का प्रयास किया गया है। अपनी लेखनी के माध्यम से इसे सजाने और संवारने वाले सभी लोगों को शुभकामनाएं। हमें आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

हिंदी- राजभाषा से विश्वभाषा

देवराज
गाज़ियाबाद

हिंदी व्याकरण में शब्दों को तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज शब्दों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। इनमें से तत्सम सीधे संस्कृत शब्द होते हैं (जैसे विद्यालय), तद्भव संस्कृत शब्द से बिगड़कर बने हुए होते हैं (जैसे दुग्ध से दूध), देशज सामान्य प्रचलन के शब्द होते हैं (जैसे चिड़िया) और विदेशज भारत से बाहर की भाषाओं जैसे अरबी–फारसी–उर्दू–तुर्की इत्यादि के शब्द होते हैं (जैसे किताब)।

जिस प्रकार गंगा नदी, गंगोत्री ग्लेशियर से एक छोटी सी धारा के रूप में निकलती है और अपने प्रवाह में कई नदी–नालों को समाहित करती हुई एक विशाल नदी का रूप धारण करती है उसी प्रकार हिंदी भाषा ने भी देवभाषा संस्कृत से उद्गम के पश्चात अनेक भाषाओं और बोलियों के शब्दों को सम्मिलित करते हुए एक विशाल शब्दकोश का निर्माण किया है और समूचे भारतीय उपमहाद्वीप में जनमानस के मध्य लोकप्रियता हासिल की है।

हिंदी की इसी लोकप्रियता के चलते, इसे 14 सितंबर 1949 में भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया था और संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिंदी के संबंध में व्यवस्था की गई थी । आशा थी कि 1965 तक आते–आते हिंदी केंद्र सरकार की एकमात्र कामकाजी भाषा बन जाएगी लेकिन हमारी प्रांतीयता और क्षेत्रीयता की संकुचित विचारधाराओं और औपनिवेशिक काल की मानसिक गुलामी के चलते, आजादी के 77 साल बाद भी अंग्रेजी ने सर्वत्र पैर पसारे हुए हैं। हमारे सारे कानून, वैज्ञानिक शोध, चिकित्सा और इंजीनियरिंग की पढ़ाई, कंप्यूटर और सबसे नई तकनीकें सब कुछ अधिकांशतया अंग्रेजी में ही होते हैं।

मनोवैज्ञानिक रुप से देखा जाए तो मनुष्य जिस मातृभाषा का प्रयोग करता है, उससे अलग किसी अन्य भाषा को राजभाषा के रूप में अंगीकार करने में असहज महसूस करता है और विद्रोह करना चाहता है। अतः प्रांतीय, क्षेत्रीय और स्थानीय भाषाओं के साथ हिंदी का संघर्ष होता रहता है। स्थानीय राजनैतिक दल भी अपने राजनैतिक स्वार्थों के चलते ऐसे मामलों को तूल देते रहते हैं। दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर भारत के कुछ राज्यों में यही स्थिति है। कभी दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योग से जुड़ा कोई व्यक्ति (के. सुदीप, कन्नड फिल्म अभिनेता) द्वारा "हिंदी अब राष्ट्रीय भाषा नहीं रह गई है" कह दिया जाता है जिसका समर्थन बड़े बड़े नेताओं द्वारा किया जाता है, कभी पूर्वोत्तर भारतीय राज्यों में कक्षा 10 तक हिंदी को अनिवार्य करने पर विरोध प्रदर्शन होते हैं, तो कभी कोई भारतीय खाद्य वितरण कंपनी (जोमैटो) का ग्राहक सेवा प्रतिनिधि किसी तमिल उपभोक्ता को "हिंदी हमारी राष्ट्रीय भाषा है" की याद दिला देता है। आए–दिन ऐसी ऊटपटाँग खबरें अखबारों में पढ़ने को मिलती रहती हैं। भाषाई विविधता को हमारी शक्ति होना चाहिए न कि राष्ट्र की एकता और अखंडता हेतु खतरा। हमें चाहिए कि प्रांतीयता और क्षेत्रीयता के कूप–मंडूक (संकीर्ण) दायरों से बाहर निकालकर व्यापक राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को आत्मसात करें।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में कुल 43.63% लोग हिंदी बोलते हैं। कम से कम भारत में तो यह 90% से ज्यादा होना चाहिए। पूरे जापान की एक ही भाषा (जापानी) है, पूरे इटली की एक ही भाषा (इतैलियन) है, पूरे रूस की एक ही भाषा (रशियन) है तो फिर पूरे भारत को भी एक भाषा हिंदी से जाना जाना चाहिए। स्थानीय भाषा को द्वितीय भाषा और अंग्रेजी को तीसरी भाषा के रूप में रखा जा सकता है।

पूरे विश्व में लगभग 7000 भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें से 90% भाषाओं को बोलने वाले लोगों की संख्या 1 लाख से कम है और मात्र 3% भाषाओं को बोलने वालों की संख्या 10 लाख से ज्यादा है। इनमें तीन प्रमुख भाषाएँ अंग्रेजी 1.34 अरब लोगों द्वारा, मेंडेरिन चाइनीज 1.12 अरब और हिंदी 60.22 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

चीन की जनसंख्या लगभग 1.43 अरब और भारत की जनसंख्या लगभग 1.4 अरब है। जल्दी ही, चीन को पीछे छोड़कर भारत की जनसंख्या विश्व में सबसे अधिक (लगभग 1. 5 अरब) होगी । सोचिए, यदि ये सभी लोग एकजुट होकर हिंदी का प्रयोग करें तो आसानी से दूसरे स्थान पर माजूद मेंडेरिन चाइनीज भाषा को पछाड़कर हिंदी को विश्व की दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बना सकते हैं।

भारत के बाद फ़िजी में सर्वाधिक 43.7% लोग हिंदी बोलते हैं। नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, संयुक्त अरब अमीरात, जमैका, मौरिशस, फ़िजी, गुयाना, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, सूरीनाम मे हिंदी भाषी समुदाय मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त, यह अमेरिका, जर्मनी, सिंगापुर, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटेन और यूरोपीय देशों में बसने वाले प्रवासी भारतीय लोगों द्वारा बोली जाती है।

अंग्रेजी को दुनिया की पहली अंतरराष्ट्रीय भाषा माना जाता है। यह उन देशों में बोली जाने वाली मुख्य भाषा है जो कभी ब्रिटेन के उपनिवेश रहे हैं। यह विज्ञान, कम्प्यूटर, उच्च तकनीक, साहित्य, राजनीति और उच्च शिक्षा की मुख्य भाषा है।

अंग्रेजी वर्णमाला में मात्र 26 अक्षर होते हैं जबकि हिंदी की वर्णमाला में 13 स्वर और 37 व्यंजनों सहित 50 अक्षर (अंग्रेजी से लगभग दुगुने) होते हैं। अक्षरों की कमी के चलते अंग्रेजी में एक ही शब्द के कई अर्थ संभव हैं जबकि अक्षरों की प्रचुरता के चलते हिंदी में उनके लिए अलग–अलग शब्द होते हैं। उदाहरण के लिए आंटी का अर्थ चाची, मामी, बुआ या मौसी कुछ भी हो सकता है जबकि हिंदी में इनके लिए अलग अलग शब्दों की व्यवस्था है।

बदलते परिवेश के साथ, विश्व मानचित्र पर भारत की उपस्थिति अत्यन्त प्रभावी परिलक्षित हो रही है। आईटी और अन्य इंजीनियरिंग क्षेत्रों में एक ज्ञानशक्ति के रूप में उभरने की बात हो, कोरोना काल में अधिकांश देशों में वैक्सीन की आपूर्ति करनी हो, तालिबान संकट के मध्य खाद्य सामग्री भेजना हो, कहीं भारतीय फिल्म कलाकारों द्वारा बनाई गई फिल्म (RRR) और उसके गाने (नाटू नाटू) को सराहा जाता है, कहीं विश्व बाजरा वर्ष मनाया जाता है, कहीं जापान–भारत तो कहीं ऑस्ट्रेलिया–भारत के रिश्तों की बात होती है, तो कहीं "आज का युग युद्ध का नहीं है" जैसे वाक्यों का संदर्भ दिया जाता है।

अतः हिंदी को विश्वभाषा बनाने का उपाय एकमात्र वसुधैव कुटुंबकम ('उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम' अर्थात उदार चरित्र वालों के लिए पूरी पृथ्वी ही परिवार है) की सनातन संस्कृति से ही संभव हो सकता है। विश्वमानव का मंगल चाहने वाली सनातन संस्कृति की गौरवशाली परम्पराओं से विदेशी लोग अत्यंत प्रभावित होते हैं। उनकी जिज्ञासा और उत्सुकता के चलते वे भारतीय जीवन

पद्धति अपनाते हैं, भारतीय परिधान धारण करते हैं, भारतीय व्यंजनों का आनंद लेते हैं, भारतीयों से संवाद स्थापित करने हेतु हिंदी बोलना–लिखना–पढ़ना सीखते हैं, आध्यात्मिक साधना पद्धतियाँ सीखते हैं और इस पुरातन संस्कृति से जुड़कर गौरवान्वित महसूस करते हैं।

(सभी आंकड़ों का स्त्रोत इंटरनेट है)

जनप्रिय हिंदी

नेहा चांवरिया
गाज़ियाबाद

भाषा सदैव से सम्पूर्ण विश्व में
मानव मानव के मध्य बनी
संप्रेषण का सशक्त औज़ार,
'हिंदी' भारत की राजभाषा का
मिला जिसे अधिकार,
भाव संवेदना व्यक्त करनी हो
या प्रस्तुत करने हो विचार,
इन सबको सरल,सक्षम
पूर्णतः सफल बनाता
हिंदी का वैज्ञानिक आधार।
विश्व भर में जनप्रिय हिंदी
गाने, फिल्म या हो समाचार,
भारत के विश्व गुरु बनने की
अब फिर से बारी है,
हिंदी की राजभाषा से
विश्व भाषा बनने की यात्रा
निरंतर जारी है।

वैश्विक स्तर पर हिंदी की दशा और दिशा

डॉ रहिला राज के एम
कार्पोरेट कार्यालय

विश्व भाषा का मतलब यह है कि जिस भाषा का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है और जिस भाषा को जनता दूसरी भाषा या अन्य भाषा के रूप में सीखती है। कुछ संदर्भों में, इसे संचार के एक साधन के रूप में माना जाता है जिसे सभी मनुष्यों द्वारा समझा जाने वाला कहा जाता है। यह विभिन्न प्राथमिक भाषाएं बोलने वाले समूहों के बीच संप्रेषण के लिए एक अंतरराष्ट्रीय सहायक भाषा भी हो सकती है। विश्व में विभिन्न प्रकार की भाषाएँ, बोलियाँ एवं उपभाषाएँ बोली जाती हैं जिससे संसार के लोगों में रहन सहन, संस्कार, सभ्यता इत्यादि में अंतर पाया जाता हैं। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के सफर में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मानव विकास के साथ–साथ भाषा में भी समयानुसार वांछित परिवर्तन आए हैं।

देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी अंग्रेजी और मंदारिन के बाद दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी भाषा भाषाओं का सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण परिवार भारतीय–यूरोपीय भाषा परिवार से है, इसको भारोपीय परिवार भी कहते हैं। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली अंग्रेज़ी भाषा भी इस परिवार से संबंध रखती है। हिंदी भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं में से एक है। यह भाषा भारत और फिजी की राजभाषा है और इसके अलावा नेपाल, मॉरीशस, गुयाना, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, युगांडा, बांग्लादेश, बेलीज, भूटान, बोत्सवाना, कनाडा, जिबूती, इक्वेटोरियल गिनी, जर्मनी, केन्या, न्यूज़ीलैंड, फ़िलिपींस, सिंगापुर, सेंट मार्टेन, संयुक्त अरब अमीरात, यूनाइटेड किंगडम, यमन, जाम्बिया में व्यापक रूप से बोली जाती है। फिजी के संविधान में हिंदुस्तानी को हिंदी के नाम से जाना जाता है और यह वहां की राजभाषा भी है। यह वहाँ के 4,00,000 से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है।

आज हिंदी भारत और विश्व के अनेक देशों में केवल एक भाषा के रूप में नहीं बल्कि भारत की संस्कृति और परंपरा को समझने के माध्यम के रूप में ध्यान आकृष्ट कर रही है। भारत देश के निर्माण और उसकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में हिंदी की भूमिका विशिष्ट रही है। आज जब संचार माध्यमों और बाज़ार का अप्रत्याशित विस्तार हो रहा है तब हिंदी का दायित्व और भी बढ़ा गया है।

हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है 'विश्व हिंदी सम्मेलन', जिसमें विश्वभर के हिंदी प्रेमी और विद्वान लोग शामिल होते हैं। विश्व हिंदी सम्मेलन की यात्रा दिनांक 10 जनवरी, 1975 को नागपुर, भारत से शुरु हुई। इसके आयोजन करने का विचार राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, वर्धा द्वारा वर्ष 1973 में प्रस्तुत किया और इस संकल्पना के फलस्वरूप राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, वर्धा के नेतृत्व में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया था। हिंदी को विश्व स्तर पर प्रचार और प्रसार

करना विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्देश्य है। इस उद्देश्य से हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय दर्जा भी मिलने लगा है।

हिंदी ने भाषा, व्याकरण, साहित्य, कला, संगीत के साथ–साथ अभिव्यक्ति के सभी माध्यमों में अपनी उपयोगिता, प्रासंगिकता एवं वर्चस्व कायम किया है। हिंदी की इस स्थिति में हिंदी भाषियों और हिंदी समाज का महती योगदान है। मौलिक विचार मातृभाषा में आते हैं। कल्पना के पंख लगते हैं। शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा होनी चाहिए क्योंकि शिक्षा के माध्यम से विचार करना सिखाया जाता है और मौलिक विचार उसी भाषा में हो सकता है जिस भाषा में आदमी सांस लेता है, जीता है। जो दूसरी भाषा व्यक्ति अर्जित करता है उसमें मौलिक विचार नहीं आ सकते। हिंदी किसी भाषा से कमजोर नहीं और न ही हीन है।

आज की परिस्थिति में अगर देखें तो दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी भाषा होने के बावजूद हिंदी अभी संयुक्त राष्ट्र में भाषा के तौर पर शामिल नहीं हो पाई है। हिंदी के पास भाषिक क्षमता इतनी ज्यादा है कि वह आसानी से विश्वभाषा बन सकती है। मंदारिन, अंग्रेजी के बाद हिंदी दुनिया की तीसरी भाषा है। दुनिया के कुछ ताकतवर देशों ने अपनी प्रचार तोपें यह सिद्ध करने में लगा रखी हैं कि अंग्रेजी न केवल विश्व की श्रेष्ठतम भाषा है बल्कि सबसे बड़ी भाषा भी है। वह बड़ी है इसमें कोई शक नहीं, लेकिन वह सबसे बड़ी भी नहीं हो सकती।

अंग्रेजी सिर्फ अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और आधे कनाडा में बोली जाती है। उसे दुनिया की सबसे बड़ी भाषा नहीं माना जा सकता है। इन देशों में भी सभी लोग अंग्रेजी नहीं बोलते। खुद अंग्रेजी के कई इलाके हैं जहां अंग्रेजी बोली नहीं जाती, अगर बोली भी जाती है तो यह संख्या काफी कम है। ब्रिटेन के वेल्स, स्काटिश और आयरिश भाषाओं का अंग्रेजी से काफी संघर्ष रहा है और इन भाषाओं ने लंबे संघर्ष के बाद अपना अस्तित्व कायम किया है।

बोलने वालों की संख्या के हिसाब से देखा जाए तो दुनिया भर में जितने लोग अंग्रेजी बोलते हैं उससे कहीं ज्यादा करीब 70 करोड़ लोग अकेले भारत में हिंदी बोलते हैं। पूरा पाकिस्तान हिंदी बोलता है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी हजारों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। इसके अलावा फिजी, गुयाना, सूरिनाम, त्रिनिदाद जैसे देशों में हिंदी भाषी बसे हुए हैं। भाषा, व्याकरण, साहित्य, कला, संगीत के साथ–साथ अभिव्यक्ति के सभी माध्यमों में हिंदी ने अपनी प्रासंगिकता एवं वर्चस्व कायम किया है। लेकिन समाज में यह धारणा भी है कि अंग्रेजी बोलने वाला ज्यादा ज्ञानी और बुद्धिजीवी है जो हिंदी भाषियों में हीन भावना ग्रसित करती है।

वस्तुतः इस गलतफहमी को दूर करने की दिशा में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1977 में पहला कदम उठाया, जब वह भारत के विदेश मंत्री थे। यह पहला अवसर था जब भारत के किसी राजनेता ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देने का साहस दिखाया था। इसके बाद सन् 2002 में दोबारा अटल जी ने ही संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण दिया। अटल जी ने प्रधानमंत्री और उससे भी पहले विदेशमंत्री के रूप में जो किया, यह सिर्फ एक भाषण नहीं था। वह वास्तव में यह संकेत था कि दुनिया आपकी बात आपकी भाषा में सुनने को तैयार है, आप सुनाकर तो देखिए। पहली आवश्यकता इस बात की है कि आप अपने को मानसिक रूप से तैयार करें। स्वयं को दासता की मानसिकता से मुक्त करें। उनके बाद उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए श्रीमती सुषमा स्वराज ने भी मोदी सरकार में विदेश मंत्री रहते 30 सितंबर 2018 को हिंदी में ही भाषण दिया। भारतीय भाषाओं के सम्मान को ठोस रूप देने के क्रम को और आगे बढ़ाया वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने। अपनी इच्छाशक्ति दिखाते हुए ही मोदी सरकार ने सन 2018 में 'हिंदी / यूएन प्रोजेक्ट' शुरू किया। इस परियोजना का उद्देश्य हिंदी

भाषा के जरिए संयुक्त राष्ट्र के दृष्टिकोण को और व्यापक बनाने के साथ–साथ दुनिया भर में फैले करोड़ों हिंदी भाषियों के बीच अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के बारे में अधिकाधिक जागरूकता फैलाना है।

इन प्रयासों के फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र ने प्रस्तुत किए गए बहुभाषा प्रयोग संबंधी प्रस्ताव को गत 10 जून को एक उल्लेखनीय पहल करते हुए पारित कर दिया। 193 सदस्य शामिल संयुक्त राष्ट्र महासभा में अंडोरा द्वारा प्रस्तुत यह प्रस्ताव भारत सहित 80 से अधिक देशों द्वारा सह–प्रायोजित था। इसमें तीन भारतीय भाषाओं–हिंदी, बांग्ला और उर्दू के अलावा पुर्तगाली, स्वाहिली और फारसी का भी जिक्र है। यद्यपि हिंदी इस प्रस्ताव के पारित होने मात्र से कोई संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा नहीं बन गई।

वर्तमान में विश्व में दैनिक समाचार पत्रों की दृष्टि से प्रथम बीस समाचार पत्रों में हिंदी के पांच समाचार पत्रों का समावेश है। विश्व में क्रमशः दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान एवं राजस्थान पत्रिका का प्रमुख समावेश है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्वर्ड, येल, शिकागो, वाशिंग्टन, मोन्टाना, टेक्सास एवं कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालयों समेत कई अन्य विश्वविद्यालयों में भी हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। अमेरिका के अनेक राज्यों के पब्लिक स्कूलों (सरकारी विद्यालयों) में भी हिंदी भाषा का विकल्प दिया जा रहा है। इसी प्रकार ऑस्ट्रेलियन नेशनल विश्वविद्यालय, टोक्यो विश्वविद्यालय, जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय में भी हिंदी के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

इसी दिशा में वैश्विक स्तर पर हिंदी की स्थिति में काफी बदलाव आया है। फिर भी हिंदी को एक वैश्विक भाषा बनने की दिशा में उसे मंदारिन चीनी और अंग्रेजी को हराना होगा जिसके लिए हम सभी के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

हंसना ज़रूरी है...

अकबर- बीरबल मैं बड़ी कश्मकश में हूं...

बीरबल- क्यूं महाराज?

अकबर- शरीर कहता है व्यायाम छोड़ दूं,

आत्मा को जलेबी और समोसे पसंद है, क्या करूं?

बीरबल- शरीर तो नश्वर है महाराज,

आत्मा की बात मानिए...

हिंदी देश से विदेश तक

अभिषेक कुमार
हैदराबाद

देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली, विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली, भारत की राजभाषा हिंदी, भारत ही नही अपितु विश्व के कई अन्य देशों जैसे फिजी, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, जमैका, त्रिनिदाद और टोबैगो, मॉरीशस, फ्रेंच गुयाना आदि देशों के कुछ समुदायों की मातृभाषा है, इसके अलावा नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, युगांदा, पाकिस्तान, बांग्लादेश इत्यादि देशों में भी हिंदी बोलने वाले बड़ी संख्या में हैं। आज भारत विश्व में, सबसे तेज उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। विश्व के कई देश, अच्छे एवं सस्ते उत्पादों के लिए भारत का रुख कर रहे हैं क्योंकि भारत एक बड़े उत्पादन केंद्र के रूप मे विकसित हो रहा है। भारत अपने सभी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक लेन देन में, राजभाषा हिंदी की उपयोगिता को महत्व दे रहा है। स्वामी प्रभुपाद जी द्वारा चलाया गया "हरे कृष्ण आंदोलन" आज विश्व के 77 देशों में भगवान श्री कृष्ण की अमृत वाणी गीता का प्रचार – प्रसार हिंदी में ही हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयास से, 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, आज सम्पूर्ण विश्व में मनाया जाता है। भारत के योगी इस योग विद्या का अच्छे से प्रचार कर रहे हैं एवं भारत, विश्व में "योगगुरु" के रुप मे प्रसिद्धि पा चुका है। विदेशों में बने भारत के दूतावास, त्योहारों के अवसर पर कई सांस्कृतिक आयोजन कराते हैं जिसमें सिर्फ प्रवासी भारतीय ही नहीं, अपितु वहाँ के स्थानीय निवासी भी इसमे सम्मिलित होकर आनंदित होते हैं और कुछ इस तरह भी भारत की संस्कृति एवं भाषा हिंदी को विदेशों में भी लोग जान रहे हैं।

भारत इस वर्ष (2023) जी20 की अध्यक्षता कर रहा है एवं इस दौरान विश्व के कई बड़े देशों के राजनयिक भारत आ रहे हैं और भारत भी अपनी संस्कृति, भाषा, तरह–तरह के भारतीय भोजन एवं कलाओं का प्रदर्शन करने में पीछे नहीं है। भारत विश्व को बता देना चाहता है कि ये 21वीं सदी भारत के उत्थान की, गौरव की एवं विकास की सदी है। भारत विश्व गुरु बनने की राह में आगे बढ़ चला है और भारत के इस गौरव को पुनः पाने में भारत की राजभाषा हिंदी का बड़ा योगदान रहेगा। हम सभी भारतवासियों को अपने–अपने कार्य क्षेत्र मे हिंदी को प्राथमिकता देनी है और अंग्रेजी के बढ़ते उपयोग को कम करना है। वो दिन दूर नहीं जब विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या हिंदी को अपनाएगी और हिंदी सिर्फ भारत की राजभाषा ही नहीं अपितु विश्व भाषा के रुप मे उपयोग की जाएगी। इसी विषय पर कुछ पंक्तियां कलमबद्ध कर रहा हूं –

आओ सब मिल के गाएं, हिंदी तो जन मन भाए,
भारत की है ये राजभाषा, हिंदी बनेगी विश्व भाषा ॥2॥

देश का उत्थान हो, विश्व का कल्याण हो,
गीता सा अद्‌भुत ज्ञान हो, विश्व गुरु का स्वप्न महान हो
सबको यही बताना है, एक ही स्वर में गाना है,
भारत का गौरव है हिंदी, वाणी की सौरभ है हिंदी,
उन्नति का खोलता परम द्वार, युवाओं का प्रयत्न प्रहार,
जाति पाति और स्वार्थ भाव, हम सब कुछ आज भुलाएंगे,
नव भारत के निर्माण में, हम सब हाथ बटाएंगे।
यही पंक्तियां इसी गीत की बार बार दोहराएंगें,
आओ सब मिल के गाऐं, हिंदी तो जन मन भाए,
भारत की है ये राजभाषा, हिंदी बनेगी विश्व भाषा ॥2॥

हिंदी हिंदू हिंदुस्तान, भारतेन्दु का नारा यही लगाना है,
हिंदी में शिक्षा लेकर, हिंदुस्तान प्रखर बनाना है।

विश्व पटल पर एक ध्वनि, भारत का सरगम गाएगी,
आसमान से अंतरिक्ष तक, तीन रंग छा जाएंगें,
केसरिया सफेद हरा, भारत की गाथा गाएंगें,
यही पंक्तियां इसी गीत की बार बार दोहराएंगें,
आओ सब मिल के गाऐं, हिंदी तो जन मन भाए,
भारत की है ये राजभाषा, हिंदी बनेगी विश्व भाषा ॥2॥

बच्चा–बच्चा राष्ट्र का, हिंदी स्वर में गाएगा,
समस्त विश्व को सत्य मार्ग, भारत ही अब दिखलाएगा,
प्रबल कामना है यह मेरी, सभी राष्ट्र के वासियों से,
हिंदी को अपनाकर, अपना भी अनुदान करो,
भारत माता को विश्व में, सबल राष्ट्र प्रदान करो।
यही पंक्तियां इसी गीत की बार बार दोहराएंगें,
आओ सब मिल के गाऐं, हिंदी तो जन मन भाए,
भारत की है ये राजभाषा, हिंदी बनेगी विश्व भाषा ॥2॥

मां

रंजीत करमचंदानी
कार्पोरेट कार्यालय

मां के लिए जितना लिखूं, पड़ जाते हमेशा शब्द कम हैं,
प्रयास भी अगर करता हूं, तो हमेशा हो जाती आंखे नम हैं।

बहुत बार सोचता हूं, क्या उसके पास चुनौतियां कम हैं,
जो फिर भी उसने ओड रखे हमारे हिस्से के भी गम हैं ।

जानते हुए कि, जिसकी उंगली पकड़कर चलना सीखे हम हैं,
न जाने क्यूं, इस भागदौड़ में हो जाता उसी के लिए समय कम है।

मां है ना, सब संभाल लेगी, इसी विश्वास पर तो जिंदा हम हैं,
न हो तेरा आशीर्वाद साथ, तो जीवन में 500 रनों का स्कोर भी कम है।

मां, दुनिया का हर पकवान तेरे हाथ के खाने के आगे फीखा है,
मुझे पता है, हमारी खुशियों में ही तुमने अपनी जिंदगी जीना सीखा है।

तेरे इस निस्वार्थ प्रेम, ममता और दुलार को मेरा शत शत नमन है,
इतने हैं कर्ज तेरे, कि चुकाने के लिए शायद सौ जनम भी कम है।

हिंदी-देशव्यापी से विश्वव्यापी

नितेश तिवारी
गाज़ियाबाद

प्रस्तावना– किसी भाषा की व्यापकता से तात्पर्य अधिक से अधिक जनसमूहों में भाषायी स्तर पर उसकी अत्यधिक लोकप्रियता से है। सामान्य जनमानस के दैनिक भाषायी क्रियाकलापों में किसी मुख्य भाषा का प्रभुत्व अन्य भाषाओं की तुलना में उसकी व्यापकता को दर्शाता है। वैश्विक मध्यकालीन इतिहास पर दृष्टि डाली जाए तो अधिकतर संसार पर ब्रिटिश उपनिवेश के कारण अंग्रेजी के प्रचार प्रसार व कार्यालयीन क्षेत्रों में इसके वर्तमान वर्चस्व को नकारा तो नहीं जा सकता है, परंतु आज भी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा मेंडरिन (चीनी भाषा) है, जबकि अंग्रेजी के बाद हिंदी तीसरे स्थान पर है, वो भी तब जब हिंदी से जुड़ी और इसी से निकली भाषाओं को इसमें जोड़ा नहीं जाता है। उन भाषाओं की गिनती के उपरांत तो हिंदी मेंडरिन को भी टक्कर देने से नहीं चूकेगी! वहीं एनकारटा एनसाईक्लोपीडिया के अनुसार चीनी भाषा के बाद हिंदी दूसरी सबसे अधिक बोली जाने भाषा है। आज हिंदी पूरे विश्व में 258 मिलियन' से अधिक लोगों की मातृभाषा है।

अटल जी जैसे महान नेताओं द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में दिए गए हिंदी भाषण से विश्व पर बढ़ते हिंदी के प्रभाव व इसके विश्वव्यापी वर्चस्व का मूल्यांकन एक रोचक एवं विचारणीय विषय है।

हिंदी का विश्वव्यापी स्वरूप– उपनिवेश के दौरान भारत से लोगों को मजदूरी के नाम पर दास बना कर ब्रिटिश सरकार अपने अन्य उपनिवेशी देशों में लेकर जाती थी। आज आधुनिक दशा यह है कि ब्रिटिश उपनिवेश का भाग रह चुके फ़िजी,टोबागो,त्रिनिदाद, मॉरिशस, अन्य कुछ अफ्रीकी देशों में हिंदी का वर्चस्व देखने को मिलता है। फ़िजी की तो आधिकारिक भाषा ही हिंदी है। इसके अलावा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, यमन, म्यांमार, इन्डोनेशिया में हिंदी अपनी छाप छोड़ती है। पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने तो अपने कार्यालय में हिंदी अनुवाद विभाग की स्थापना की थी। विश्व के अधिकतर विश्वविद्यालयों में हिंदी का सुचारु रूप से व्यवस्थित अध्ययन चालू हो चुका है, जहां पर हिंदी के लिए विशेष विभागों की स्थापना कि गई है। अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, हॉलैंड, चीन, जापान, रूस, हंगरी, थाइलैंड, उज्बेकिस्तान आदि देशों में हिंदी पर शोध व शिक्षण संस्थान स्थापित किए गए हैं। इस तरह अमेरिका के 45 विश्वविद्यालयों सहित पूरे विश्व में 176 'विश्वविद्यालयों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी हिंदी में अध्ययन कर रहे हैं। भारत सरकार द्वारा प्रति वर्ष सांस्कृतिक सभ्यता विनिमय योजना के दौरान हिंदी शिक्षक विदेशों में भेजे जाते हैं, जो हिंदी भाषा के विदेशों में शैक्षिक प्रहरी की तरह कार्य करते हैं। वहीं दूसरी ओर भारत सरकार द्वारा छात्रवृत्ति पर विदेशी छात्र, दिल्ली स्थित केंद्रीय हिंदी संस्थान में शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। एक तथ्य यह भी है कि ऑक्सफोर्ड विश्व शब्दकोश द्वारा 2017 में 70 हिंदी शब्दों को शामिल किया गया था।

संयुक्त राष्ट्र महासंघ में 6 भाषाओं को आधिकारिक भाषा का स्थान प्राप्त है। इसी कड़ी में भारत सरकार हिंदी को उसका स्थान दिलाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके परिणामस्वरूप जून, 2022 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्णय लिया गया कि सभी आधिकारिक संदेश हिंदी भाषा में भी प्रकाशित किए जाएंगे। वर्तमान में विश्व स्तरीय शोध संस्थाएं भी शोध पत्रों का प्रकाशन हिंदी में कर रही हैं।

विश्व के आर्थिक क्षेत्रों पर हिंदी का प्रभाव– सन 1992 से पहले भारतीय उद्योग जगत विश्व व्यापार संस्थाओं के लिए खुला नहीं था। तत्कालीन सरकार द्वारा उदारीकरण व वैश्वीकरण की

नीतियों के कारण विश्व व्यापारिक संगठनों व संस्थाओं को भारत में प्रवेश का अवसर मिला, जिसके उपरांत विश्व आर्थिक जगत ने भारतीय उपभोक्ता के सामर्थ्य को समझा तो पाया कि उत्पादों को भारतीय जनता तक पहुँचाने के लिए हिंदी में विज्ञापनों की मुख्य भूमिका होगी। तब से लेकर आज तक समाचार पत्र, टीवी, इंटरनेट, मोबाइल आदि पर विज्ञापनों में हिंदी का वर्चस्व देखने को मिल रहा है।

हिंदी भाषा के सिनेमा जगत का भी विदेशों में बोलबाला है। हिंदी भाषा के चलचित्र उज्बेकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, रूस, जापान, इन्डोनेशिया, बांग्लादेश आदि देशों में लोकप्रिय हैं तथा विदेशी मुद्रा को भारत लाते हैं। अंग्रेजी भाषा के अलावा अन्य भाषाओं के चलचित्रों का हिंदी अनुवाद व रूपान्तरण होता है। इन चलचित्रों को भारतीय हिंदी भाषी दर्शक बहुत पसंद करते हैं।

वर्षों से विदेशों में होने वाली खेलकूद प्रतियोगिताओं का प्रसारण हिंदी में होता आ रहा है। विदेशी समाचार पत्र–पत्रिकाएं व एजेंसियां विश्व भर में फैले हिंदी भाषियों तक अपना कंटेंट हिंदी भाषा में प्रसारित कर रहीं हैं। टाइम, द इक्नोमिक्स टाइम्स इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। भारतीय मजदूर आज विश्व की कई अर्थव्यवस्थाओं के लिए रीढ़ की हड्डी के समान हैं। इन कम पढ़े लिखे हिंदी भाषी मजदूरों से काम करवाने के लिए विदेशी कंपनियों द्वारा प्रबन्धकों आदि कर्मचारियों की नियुक्तियों में हिंदी भाषा का मापदंड भी रखा जाता है। मध्यपूर्व के खाड़ी देशों में भारतीय प्रवासी मजदूरों का बोलबाला है। भारत के प्रशिक्षित प्रवासी नागरिक भी हिंदी भाषा के अप्रत्यक्ष वाहक हैं। 132 देशों में बसे 2 करोड़ से अधिक प्रवासी भारतीय हिंदी भाषा का उपयोग व प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

भारत में ही स्थापित कई धार्मिक संस्थाएं भी विदेशों में हिंदी के प्रचार प्रसार की राजदूत बन कर उभरीं हैं। आज कई विदेशी नागरिक भारतीय ग्रन्थों व महाकाव्यों को समझने के लिये हिंदी सीख रहें हैं वहीं ये लोग भारत के धार्मिक नगर जैसे वाराणसी, मथुरा, ऋषिकेश आदि नगरों में वास करते हैं। इस प्रकार से भारतीय पर्यटन उद्योग ने भी विदेशी पर्यटकों को भी हिंदी के अप्रत्यक्ष प्रचारकों के रूप में स्थापित किया है। ये विदेशी पर्यटक भारतीय भाषाओं का पूरे विश्व में प्रचार प्रसार करते हैं।

इंटरनेट पर हिंदी का प्रभाव– हम सभी जानते हैं कि इंटरनेट ने किस तरह से पूरे विश्व को एक पटल पर लाकर समेट दिया है। वर्तमान में 400 मिलियन से अधिक भारतीय इंटरनेट का उपयोग कर रहें हैं। विश्व आर्थिक जगत पर पड़े हिंदी प्रभावों के अनुसार ही इंटरनेट जगत भी इससे अछूता नहीं है। भारतीय उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए विदेशी कंपनियाँ अपने उत्पादों तथा इनके विज्ञापनों में हिंदी का उपयोग कर रहीं हैं। गूगल, माइक्रोसॉफ़्ट, एप्पल जैसी शीर्ष संस्थाएं अपने उत्पादों में हिंदी का उपयोग व हिंदी भाषियों के लिए उत्पादों पर निरंतर नए प्रयोग कर रहें हैं। गूगल का गूगल असिस्टेंट व एप्पल एलेक्सा आपसे हिंदी में बात करते हैं।

वर्षों से ऑनलाइन उत्पाद बिक्री करने वाली कंपनियां भी सभी उत्पाद विज्ञापनों को हिंदी में अपनी वेबसाइट पर दिखाती आ रही हैं। जेबोंग, फ्लिपकार्ट, अमेज़न आदि इसके उदाहरण हैं। सोशल मीडिया वेबसाइटस जैसे फ़ेसबुक, वॉटस्ऐप आदि हिंदी भाषियों के अनुसार काम करती हैं।

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस जैसी नई प्रौद्योगिकी से हिंदी उत्पादों तथा शोधों को नया व आधुनिक स्वरूप दिया जा रहा है। चेट जीपीटी का आपसे हिंदी में बात करना एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। वहीं कोरोना जैसी महामारी के बाद सामूहिक मनोरंजन करने वाली व्यवस्थाओं पर रोक लग गयी थी।

पहले से स्थापित ओटीटी बाज़ार ने इस दौरान हिंदी भाषियों की और ध्यान दिया। यह विचारणीय विषय था कि एक अरब से ज्यादा जनसंख्या वाला देश जब किसी महामारी की वजह से घर बैठ जाएगा तो करेगा क्या? इसी लक्ष्य को साधते हुए नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम, सोनी लिव आदि कंपनियों ने हिंदी कंटेंट की रचनात्मकता पर ज़ोर दिया। अंग्रेजी के अलावा विश्व की अन्य शीर्ष भाषाओं में बनने वाले कंटेंट का हिंदी अनुवाद कर के भारत में ओटीटी (ओवर द टॉप) एप्लीकेशन पर दिखाया जा रहा है। इंटरनेट जगत पर हिंदी भाषियों का साम्राज्य आगे भी पैर जमा रहा है।

निष्कर्ष– इस तथ्य में तनिक भी संदेह नहीं है कि हिंदी तथा हिंदी भाषियों के प्रभुत्व एवं वर्चस्व को विश्व जगत भलीभाँति समझता है। हिंदी भाषियों का हिंदी से प्रेम तथा हिंदी के वैज्ञानिक स्वरूप को पहचानते हुए विश्व के शीर्ष विश्वविद्यालयों ने हिंदी को अपनाया है। वहीं विश्व आर्थिक जगत हिंदी भाषा को अँग्रेजी तथा चीनी भाषाओं के समान एक वैश्विक भाषा का दर्जा देता है। विश्व की शीर्ष संस्थाएं, मनोरंजन, सूचना प्रसारण, इंटरनेट आदि क्षेत्रों में हिंदी की भूमिका को समझती हैं, हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना भविष्य देखती हैं। यह बात कहना गलत होगा कि आने वाला भविष्य हिंदी का होगा,बल्कि यह तो हिंदी का समय ही चल रहा है।

विश्वभाषा बनती हिंदी

अंशु मोहन
कॉर्पोरेट मानक

हिंदी राजभाषा जो है,
दुनिया में बड़ी ख्याति पाई।
हम सब इसे अनमोल वस्तु मानते हैं,
क्योंकि इससे लोगों से बात होती है।

हिंदी से लोगों के दिल खुश होते हैं,
इस भाषा में जो उच्चारण होता है,
उसे सुनकर दिल खुश हो जाते हैं।
हिंदी राजभाषा से विश्वभाषा बनी,
यह इससे ओजस्वी अधिक हो गई।

हम सब इसे महत्वपूर्ण मानते हैं,
यह हमारे घरों में जैसी भाषा है।
हर कोई चाहता है अपनी भाषा का उपयोग हो,
हिंदी से करते हैं संभाषण, करते हैं व्यवसाय।

इस भाषा की जड़ें बहुत पुरानी हैं,
अनेक युगों से यह आख्यानी रही हैं।
हर जगह हर वक्त हम इसे सुनते हैं,
हिंदी की सुंदर ध्वनियों को सुनकर हम खुश होते हैं।

हिंदी राजभाषा से विश्वभाषा बनने की कल्पना,
हम लोगों के दिल में हमेशा रहती हैं।
इससे बहुत सारे लोग जुड़ जाएंगे,
हम सब मजबूत बनेंगे और सफल हो जाएंगे।

इसलिए हमें हमेशा हिंदी का समर्थन करना होगा,
इस भाषा के उत्कृष्ट महत्व को समझना होगा।
हर जगह इस भाषा का उपयोग करना होगा,
हिंदी से दोस्ती करना होगा।

अमीर कौन?

शिवकुमार
पंचकुला

लगातार एक सप्ताह की छुट्टियां होने के कारण पति–पत्नी ने छोटे बच्चे के साथ अपनी कार से घूमने का कार्यक्रम बनाया। गाड़ी से चलते हुए, रात होने का कारण एक होटल में रुकना पड़ा। देर रात को बच्चा भूख से रोने लगा क्योंकि दूध का प्रबंध नहीं हो पाया था। इसलिए होटल की रिसेप्शन पर फोन करके एक गिलास दूध का पता किया तो हां में उत्तर मिलने के बाद थोड़ी देर में वेटर 200 मि.लि. दूध एक गिलास में लेकर आ गया भूख से रोता हुआ बच्चा दूध पीकर आराम से सो गया।

सुबह अगले पड़ाव पर जाने की तैयारी हुई तो बिलिंग के लिए रिसेप्शन पर पहुंचे. वहां बिल पहले से ही तैयार था। जिसे देखने पर पता चला कि रात को दिए गए 200 मि.लि. दूध की कीमत 200 रुपए लगी हुई है जिससे दिमाह घूम गया परंतु फिर भी बिल अदा किया और अगली यात्रा पर चल पड़े। क्योंकि रास्ता पहाडी था, अभी कुछ ही दूर चले थे कि पत्नी ने फिर से कहा कि यदि रास्ते में कोई चाय की दुकान आती है तो रोक लें क्योंकि बच्चे के लिए दूध चाहिए।

कुछ दूर चलने के बाद उन्हें एक झोंपडी में चाय की दुकान नज़र आई वहां पर गाड़ी रोकने पर बुजुर्ग दूकानदार से पूछा कि बाबा जी बच्चे के लिए थोड़ा दूध मिल सकता है क्या? दूकानदार बोला क्यों नहीं बाबू जी और उन्होंने वहीं बैठकर बच्चे को दूध पिलाने को कहा। भूख लगी होने के कारण बच्चा भी चुपचाप दूध पीने लगा। दूध पिलाकर चलने से पहले दुकानदार से दूध के पैसे पूछे तो बुजुर्ग दुकानदार ने बच्चे के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा कि बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं, इसलिए मैं बच्चे के दूध के पैसे नहीं ले सकता और हां यदि, आप के पास बोतल है तो रास्ते के लिए भी दूध ले लो क्योंकि पहाड़ी रास्ते पर दुकान कम ही मिलती हैं। पति–पत्नी दोनों बुजुर्ग दुकानदार को पैसे देने की बहुत कोशिश की परंतु वह पैसे लेने को तैयार नहीं था। अंत में पति–पत्नी ने बच्चे के लिए बोतल में दूध लिया और आगे चल पड़े।

परंतु रास्ते में दोनों के दिमाग में सिर्फ एक ही प्रश्न था कि होटल वाले अमीर हैं या यह बुजुर्ग दुकानदार?

अंतरराष्ट्रीय पटल पर हिंदी

ऋचा रावत
कोटद्वार

आत्मा की अंतर्ध्वनि से भारत में सरस्वती के तट पर विश्व में पहली बार शब्द प्रकट हुआ। उसने स्वयं को ब्रहा में अभिव्यक्त किया। ब्रहा शब्द बना, शब्द ब्रहा कहलाया। अभिव्यक्ति बोली बनी और भाषा का जन्म हुआ। नवजात शिशु का नाम पडा संस्कृत अर्थात् परिष्कृत, सुव्यवस्थित, बार बार पुनरीक्षित। लोक आकांक्षाओं के अनुरूप संस्कृत ने अनेक रूप पाए। भारत में वह वैदिक से लौकिक संस्कृत बनी और अपभ्रंश होकर हिंदी बनी।

हिंदी के अनेक रूप वर्षों से हमारे बीच हैं। एक हिंदी–रचना की भाषा है, एक हिंदी–विचार की भाषा है, एक हिंदी–संचार की भाषा है, एक हिंदी–बोलचाल की भाषा है। हिंदी सरल है, भारतीय सभ्यता व संस्कृति की परिचायक है, सभी कार्य चलाने में समर्थ है। देश की 80 प्रतिशत जनसंख्या द्वारा बोली और समझी जाती है। उसका साहित्य विश्व के किसी भी साहित्य को चुनौती देने में सक्षम है, उसकी देवनागरी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है इसलिए यह राष्ट्रभाषा व राजभाषा पद के सर्वथा योग्य भारतीय भाषा है जिसके कारण यह राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है।

देश में सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा आंदोलन का सूत्रपात बंगाल से हुआ था। उस समय के विद्वान दूरदर्शी महापुरूषों ने भारत वर्ष को स्वतंत्र करने के लिए एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता का अनुभव किया था। बंगाल के सुप्रसिद्ध ऋषि और लोकसेवक आचार्य केशवचद्र सेन ने इसका सूत्रपात किया। उन्होंने भारत की राष्ट्रीय महासभा के जन्म से दस वर्ष पूर्व ही संवत 1875 में घोषणा की थी कि देश व्यापी एकता स्थापित करने के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना अनिवार्य है और वह राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है। क्योंकि जितनी भी भाषाएं भारत में बोली जाती है और प्रचलित है उनमें हिंदी ही सर्वाधिक व्यापक है। मनुष्य चाहे कितनी भी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर ले लेकिन अपनी भावनओं की अभिव्यक्ति के लिए उसे अपनी भाषा की शरण लेनी पड़ती है इससे उसे मानसिक संतोष का अनुभव होता है, इसलिए इन्हीं सर्वोच्च गुणों के कारण संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया।

दुनिया की कोई भी भाषा हो, उसे अगर जिंदा रहना है तो बहना होगा और हिंदी हमेशा लोक कंधे पर सवार हो कर चली है, राजपालकी पर बिछाने की बात हो तो दिक्कत होती है, उसका विरोध होता है, राजनीति और कूटनीति होती है, वह लौट कर लोक के पास आती है तो उसका सफर तेजी से आगे बढ़ने लगता है। हिंदी अनौपचारिक भाषा है वह जैसे ही औपचारिक होती है, परेशानी शुरू हो जाती है वह किसी के नियंत्रण में नहीं चलती। जब जब उसे नियंत्रित करने की कोशिश हुई तो दिक्कतें पैदा हुई। याद कीजिए दूरदर्शन का दौर जब जब हिंदी को नजरअंदाज किया, दर्शकों के लाले पड़ गए। हिंदी के मनोरंजन चैनल अस्सी प्रतिशत भारतीय बाजार पर काबिज हैं।

हिंदी का हाल हिंदुस्तान में कैसा है, बयान कर पाना कठिन है। उम्मीद है, आशंकाएं हैं, समर्थन विरोध के उत्तर और दक्षिण है, लेकिन इस देश की सरहदों के पार निगाह दौड़ाएंगे तो हिंदी को

संभावनाओं के संसार में दौड़ लगाते और उसे खुद संभावनाओं का एक नया संसार रचते हुए पाएंगे। बात बाजार, व्यापार की हो या संस्कार की, बदलते दौर में दुनिया भर की निगाहें हिंदुस्तान की ओर हैं। इसलिए हिंदी की ओर भी स्वाभाविक है। एक ओर जहां मॉरिशस, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, सूरीनाम तथा फीजी जैसे देशों में प्रवासी भारतीय अपनी विरासत के तौर पर हिंदी को पालपोस रहे हैं तो दूसरी ओर अमेरीका, ब्रिटेन, इटली, जर्मनी, पोलेंड, रूस, चीन, जापान, कोरिया जैसे कई देशों के लिए यह बाजार की जरूरत बन रही है। खबर खुशनुमा है कि दुनिया के डेढ़ सौ से ज्यादा महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाने लगी है। और इस तरह यह भाषा दिन ब दिन अपना सामर्थ्य साबित कर रही है। हिंदी के दिन लद गए जैसी अटकलों के उलट अब संकेत साफ है कि आने वाले दिनों में आमजन की यही भाषा हिंदी विश्वपटल पर एक बड़ी भूमिका में आने को तैयार है क्योंकि भारत की तरह इसकी बयार विदेशों में भी बह रही है।

हिंदुस्तान से बाहर हिंदी को बचाए रखने में प्रवासी भारतीयों का योगदान अद्भुत है। दरअसल प्रवासी भारतीय जहां भी गए उन्होंने अपनी भाषा, संस्कृति को सीने से लगाए रखा। यह अजब बात जरूर हुई कि जिस देश का जैसा माहौल था वहां बोलचाल की वैसी शैली विकसित हुई। हिंदी रफता–रफता पांव पसार रही है सारी दुनिया में। वे दिन लद गए जब अमेरिका जैसे देशों में हिंदी और हिंदुस्तानीयों को हिकारत से देखा जाता था। इस दुनिया में संपर्क की भाषा अंग्रेजी व स्पैनिश है जिनकी पकड़ 51 करोड़ है। हिंदी का आंकडा 49 करोड़ को छूता है, चीनी भी बहुयातत में बोली जाती है। पर संपर्क भाषा नहीं है। सिर्फ अपने लोगों तक सीमित है। चीनी संपर्क भाषा के रूप में वैसे नहीं बोली जाती जैसे अंग्रेजी व स्पैनिश बोली जाती है, हिंदी भी उसी रास्ते पर अग्रसर है वह अपनों से ज्यादा दूसरों की भाषा बन जाती है, इसलिए यह सबसे बड़ी संपर्क भाषा के रूप में उभर रही है। हिंदी का चाहे कोई भी रूप रहा हो, लेकिन वह कम से कम हजार साल से तो इस समाज की संपर्क भाषा है और कारोबार तो संपर्क भाषा में ही संभव है और जनसंख्या की दृष्टि से पूरे विश्व की नजर भारत के बाजार में है इसलिए स्वाभाविक है कि कारोबार हेतु आपको हिंदी आनी ही चाहिए क्योंकि बाजार किसी संरक्षण को नहीं मानता उसके अपने नियम होते हैं। वह उपभोक्ता और सिर्फ उपभोक्ता को देखता है यह उपभोक्ता कौन है– आम आदमी और आम आदमी की भाषा हिंदी। बीस वर्ष पूर्व डिजनी चैनल ने हिंदी में आने फैसला किया था। उसके भारतीय प्रमुख रजत जैन का कहना था कि वह हिंदी में इसलिए आ रहे हैं क्योंकि उसमें आने से देखने वाले सीधे तौर पर दस गुना बढ़ जाते हैं, यह है हिंदी की ताकत कि उसके लिए मिकी डोनाल्ड को भी हिंदी सीखनी पड़ी।

निश्चित रूप से हमारी भाषा का अपना एक रचना संसार है और उसकी सीमा नापने जैसी बात वे ही कर सकते हैं, जिनकी यह बोलचाल की भाषा नहीं है। रही बात संचार माध्यम की तो उनका एक अलग गणित है। वहीं हिंदी व्यवसाय की भाषा है। आज आवश्यक यह है कि हिंदी जीवन की भाषा बने, कुंठा की नहीं। तुलनात्मक रूप से भी देखा जाए और आप जनगणना करें तो आपको हर प्रदेश में हिंदी की उपस्थिति अधिक मजबूत और शालीन नजर आएगी। जो भी हो, एक भाषा के रूप और रंगत में हिंदी ने अपने क्षितिज का विस्तार किया है। कुछ संकोच के साथ ही सही, पर वह दक्षिण और पूर्व में भी स्वीकृत हो रही है। बहुराष्ट्रीय बाजार व दृश्य मीडिया की कारोबारी गरज और रणनीति ने उसे नई चमक के साथ उठाया है। अब वह एक ऐसी भाषा है जिसके शब्द अंग्रेजी के प्रतिष्ठित शब्दकोश में बढ़ते जा रहे हैं। उसके पास सर्वदेशी सर्व ग्राही होने की प्रकृति है। स्पष्ट है कि हिंदी राष्टीय एकता का प्रतीक किसी क्षेत्र विशेष की सोच या आग्रह नहीं वरन संपूर्ण देश की सर्वसम्मति है। अतः हम कहते है कि हिंदी राष्ट्र की एकता की प्रतीक है।

अंत में इग्लैंड के प्रोफेसर रूपर्ट स्नेल को याद करना चाहती हूं उन्होंने ऐसी बात कही–मानो हमारी ही बात कह रहे हो कि हिंदी जिंदगी का हिस्सा है, हिंदी जिंदा है, हिंदी किसी एक वर्ग या जाति या धर्म या मजहब या मार्ग या देश या संस्कृति की नहीं है, वरन सम्पूर्ण विश्व की है।

कथा...

बंधन

किरण मनोहर देठे
क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

संजय और वैशाली दोनों इंजीनियर थे। कॉलेज में साथ–साथ पढ़े। दोनों की इंजीनियरिंग की शाखाएं अलग थीं। वैशाली कंप्यूटर इंजीनियर तो संजय इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर। एक बार ऐसे ही दोनों की कॉलेज की लाइब्रेरी में मुलाकात हो गई और पहले ही नजर में दोनों को प्यार हो गया।

संजय को कविताएं लिखने का बहुत शौक था। हमेशा लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ाई करने के बाद कुछ पंक्तियां लिख देता। उसकी बहुत सारी कविता सामाजिक जीवन और सृष्टि पर हुआ करती थी।

ऐसे ही एक कविता लाइब्रेरी में लिख रहा था। अचानक हवा का झोंका आया और वह कविता का पन्ना उड़कर वैशाली के मेज पर जा गिरा। वैशाली उस काव्यात्मक पंक्तियों को पढ़ने लगी।

"आज फिर सुबह होगी,
धरती फिर सूरज के फेरे लेगी
नए फूल फिर मुस्कराएंगे
पत्ते फिर सरसराएंगे
फल और शाखाओं पर
पंछी बैठ इतराएंगे"

बस इतना ही लिखा था। उसने यहां वहां देखा तो संजय अपने लिखे पन्ने लेने उसकी ओर आ रहा था। वैशाली उन पंक्तियों को पढ़कर बहुत खुश हुई। संजय ने उससे कहा, एक्सक्यूजमी मेरा पन्ना आप दे दो। वैशाली ने पन्ना हाथ में ही पकड़ रखा था,"क्या यह आपने लिखा है!" वैशाली ने संजय से पूछा। संजय ने हां भरी।

वैशाली ने कहा "बहुत सुंदर"! अच्छी पंक्तियां हैं। यह पन्ना मैं आपको दूंगी पर एक शर्त पर, जब यह कविता पूरी हो जाएगी तो सबसे पहले मुझे सुनाना और दोनों हंस पड़े। संजय ने भी हामी भर दी। वैशाली ने उसकी पहचान दी, थर्ड ईयर कंप्यूटर इंजीनियरिंग, संजय ने भी पहचान दी लास्ट ईयर इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग। दोनों ने हाथ मिलाया। संजय फिर अपने कुर्सी पर आ गया। वैशाली अपने नोट्स पूरे करके चली गई। फिर हमेशा ऐसे ही किसी न किसी बहाने दोनों मिलते रहे। कभी कॉलेज के पिकनिक में, कभी कॉलेज की गैदरिंग में तो कभी कॉलेज कैम्पस में। दोनों में लगाव बढ़ता गया, दोनों एक दूसरे के करीब आते गए।

एक दिन वेलेंटाइन डे पर संजय ने उससे प्यार का इजहार किया। और वैशाली ने शरमाते हुए अपनी रजामंदी दे दी।

संजय ने अच्छे अंकों से इंजीनियरिंग पूरी की। पेपर में आए एक इस्तेहार से, एक सरकारी कंपनी में साक्षात्कार भी दे दिया। हालांकि वह एक इंजीनियर था पर उसका मन हिंदी साहित्य और वाङ्मय में खोया रहता था। अक्सर कोई उपन्यास उसके हाथ में दिखाई देता था। कुछ ही दिनों में सरकारी कंपनी से अपॉइंटमेंट लेटर संजय के घर आ गया। उसके पिताजी बहुत खुश हुए। सरकारी कंपनी और वो भी नामचीन कंपनी का लेटर आते ही मानो घर में खुशियां छा गई। संजय के पिताजी भी राज्य सरकार के कर्मचारी थे। बेटे को भी अच्छी नौकरी मिलने के बाद वह गदगद हो गए।

संजय और वैशाली रविवार के दिन मिला करते थे। वैसे तो रोज मिलने का जी करता था पर वैशाली का अब लास्ट ईयर चल रहा था और संजय उसे डिस्टर्ब नहीं करना चाहता था। रविवार के दिन दोनों कोई सिनेमा देख लेते या बीच पर चले जाते। आज भी रविवार था और संजय बहुत उत्साही था। उसे अपने नौकरी की खबर वैशाली को बतानी थी। नया शर्ट और नई पैंट पहनकर वह चल पड़ा। आज दोनों जुहू बीच पर घूमने जा रहे थे। संजय मिलने की जगह पर कुछ समय पहले ही पहुंच गया। वैशाली तकरीबन पंद्रह मिनट लेट हो गई थी। पर संजय का उत्साह जरा भी कम नहीं हुआ था। वैशाली जैसे ही आई उसने अपना लेटर दोनों हाथ पर लिया और एक पैर मोड़कर घुटने के बल बैठ गया। "आइए रानी साहिबा खाविंद आप के लिए नजराना ले आया है"! वैशाली हंसने लगी, उसने भी लेटर उठाकर कहा "नजराना कबुल है"। दोनों हंसने लगे। वैशाली लेटर पढ़ने लगी और पढ़ते ही उसने संजय को खुशी के मारे गले लगा लिया। शर्मीला संजय इस तरह सब के सामने प्यार की झप्पी पाकर शरमा गया उसने बड़े मुश्किल से अपनी बाहें छुड़ाई।"आज बहुत खुश हूं मैं" वैशाली ने कहा। रोज तुम गोलगप्पे(पानीपूरी)खिलाते हो आज की पानीपूरी मेरी तरफ से। संजय ने कहा "जैसे आपका हुक्म आका" और दोनों हंस पड़े। उस रात बहुत देर तक दोनों जुहू बीच पर थे। उस दिन पूनम की रात थी। पूनम का चांद और प्यार की रोशनी से समंदर जगमगा उठा था।

संजय और वैशाली के घर दोनों के प्यार के बारे में पता था। किसी का कोई विरोध नहीं था। वैशाली ने जब अपने पिताजी को संजय की नौकरी के बारे में बता दिया तो वो बड़े निश्चिंत हो गए। अब उन्हें कोई परेशानी नहीं थी। दिन बीतते जा रहे थे। वैशाली ने अपनी इंजीनियरिंग पूरी की। उसे कैंपस इंटरव्यू में ही अच्छी आई. टी. कंपनी मिल गई। सैलरी कम दे रहे थे मगर फ्यूचर में बढ़ने का मौका था। पोस्ट भी बड़ी नहीं थी। मगर कंपनी का नाम देखकर उसने कंपनी ज्वाइन कर ली।

दो तीन महीनों में ही वैशाली के पिता संजय के घर जाकर शादी की बात कर आए। सबकी रजामंदी तो थी ही, अब सिर्फ शादी का खर्चा और शादी के संबंधित बातें ही करनी थी। सब कुछ तय हुआ और एक अच्छे दिन वैशाली और संजय की शादी हो गई। नए नवेले दूल्हे और नवेली दुल्हन के कुछ दिन कुलदेवता और कई सारे भगवान के दर्शन में चले गए।

छुट्टी के बस पांच दिन बचे थे। दोनों ने गोवा जाने का प्लान बनाया। सुबह की मांडवी एक्सप्रेस पकड़कर दोनों हनीमून के लिए रवाना हुए। अब दोनों एक दूसरे से ज्यादा दूर रह नहीं पा रहे थे। नए दुल्हा और दुल्हन की ओर सारे घूर रहे थे पर दोनों को किसी की परवाह नहीं थी।

शाम को करीब सात बजे ट्रेन करमाली स्टेशन पहुंची। पणजी के लिए यह सबसे करीब वाला स्टेशन था। प्लेटफॉर्म पर भीड़ नहीं थी। बाहर आते ही ऑटो ड्राइवर सवारी के लिए पूछने लगे। अच्छे से भाव कर एक ऑटोवाला चुन लिया। गोवा रेसीडेंसी नामक एक सरकारी होटल का कमरा बुक कर दिया था। कमरा नदी किनारे था।

ऑटो चल रही थी संजय वैशाली दोनों हाथ पकड़े बाहर देख रहे थे। शाम का वक्त था। सूरज अपनी रोशनी छुपाए जा रहा था। रात का अंधेरा उस पर भारी पड़ रहा था। गोवा कई फिल्मों में देखा था आज करीब से देख रहे थे। वहां के नारियल के ऊंचे ऊंचे पेड़, रंग बिरंगे फूल, पुराने बड़े–बड़े घर, बहुत सारे मकान अब भी पुर्तगलियों के वक्त की याद दिला रहे थे। हर घर के आगे या

पीछे रखे गए गार्ड्न ....

ऑटो अब होटल के नजदीक पहुंच गई। संजय ने किराया दिया। संजय ने मुड़कर देखा सामने ही मांडवी नदी बह रही थी।

दोनों होटल के भीतर चले गए। सरकारी होटल था और उसका रखरखाव सामान्य था। कमरा पांचवी मंजिल पर था। दोनों ऊपर चले गए, चाबी से दरवाजा खोला, लाइट स्विच ऑन किया और कमरा देखने लगे। कमरा ठीक ठाक था। दोनों बालकनी की तरफ चले गए और प्रसन्न हो गए। अब रात का वक्त था, करीबन आठ बज गए थे। सामने मांडवी नदी का विहंगम दृश्य दिखाई दे रहा था। कई नाव अब भी चल रहीं थी। अनेक नावों पर रंग बिरंगी लाइट लगी हुई थी। जिससे नदी का सारा पानी चमक रहा था। मानो किसी ने पानी पर मोती बिखेर दिए हो। उतने में दरवाजे पर खटखटाट हुई। होटल बॉय उनका सामान लेकर अंदर आया और वही मंडराने लगा। संजय पहले तो समझ नहीं पाया, पर फिर खुद हँस पड़ा और जेब से पच्चास रुपए निकालकर उसके हाथ में थमा दिए।

दरवाजा बंद कर दिया, वैशाली आकर संजय से सिमट गई। धन्यवाद संजय ऐसी अच्छी जगह पर घूमने आए। वे चार दिन चार रात बहुत आनंद और घुलमिलकर गुजारे। दोनों भी एक पल भी एक दूसरे जुदा न हो पाए।

दोनों ने तय किया कि "कम से कम तीन साल तक फैमिली प्लानिंग करेंगे, एक बार कैरियर सेट हो जाए दो, फिर बच्चों के बारे मे सोचेंगे"।

वैसे संजय सरकारी नौकर था। वह तो सेट हो चुका था, बात थी वैशाली की। वह बहुत ही महत्त्वाकांक्षी थी। उसे अच्छी सैलरी और एक ओहदा चाहिए था। संजय भी इस बात से सहमत था। हनीमून के दिन खत्म हो गए दोनों मुंबई घर लौट आए। फ़िर रोजमर्रा की जिंदगी की शुरुआत हो गई। वैशाली को रविवार के दिन छुट्टी होती, दोनों कोई फिल्म या छोटा कश्मीर (फ़िल्म सिटी के पास का गार्डन) चले जाते। संजय का घर छोटा था। उसने पिताजी से बात कर एक नया मकान पास में ही खरीद लिया। दोनों ने मिलकर हाउसिंग लोन लिया। अब उन्हें डिस्टर्ब करनेवाला कोई नहीं था।

दिन महीने बीतते जा रहे थे, वैशाली बहुत ही टैलेंटेड थी। कुछ समय में ही असिस्टेंट मैनेजर से डेप्युटी मैनेजर बन गई थी। सैलरी बढ़ रही थी, पद बढ़ रहा था, तो काम भी बढ़ रहा था, जिम्मेदारी भी बढ़ रही थी। बहुत ही कम समय वो घर पर दे पा रही थी। संजय को कोई समस्या नहीं थी। वैशाली का पति होने के नाते उसे उसकी तरक्की का अभिमान होता था। संजय सिर्फ रविवार की उम्मीद कर बैठा रहता था। घर पर हर काम के लिए नौकर रखे गए थे। सुबह का नाश्ता सिर्फ संजय ही बनाता क्योंकि सरकारी नौकरी होने से उसे कार्यालय जल्दी पहुंचना पड़ता था। कभी ब्रेड ऑमलेट तो कभी उपमा बनाके घर छोड़ देता। वैशाली प्राइवेट जॉब कर रही थी। सुबह लगभग ग्यारह बजे घर से निकल लेती और देर रात घर आती। शाम को मेड आकर खाना बनाती। दोपहर का खाना दोनों अपनी कंपनी के कैंटीन में खाया करते थे।

शादी के तीन साल पूरे होने आए थे, वैशाली अब मैनेजर के पद पहुंच चुकी थी। ऑफिस में सारे लोग उसकी प्रतिभा की प्रशंसा करते थे। इतनी कम साल में यहां तक पहुंचना नामुमकिन था।

अब वैशाली का काम और दायित्व दोनों पहले से ज्यादा बढ़ गए। अब रविवार के दिन भी वो व्यस्त रहने लगी। संजय अब खामोश रहने लगा था। वैशाली से कुछ कहने जाए तो,"प्लीज मैं बिजी हूं"! कहकर उसे टाल देती। संजय अब शाम को अपने दोस्तों के साथ बाहर जाकर रात को देरी से घर आने लगा था। तब तक वैशाली फ्री हो जाती थी और रात को लेट आने पर संजय को बाते सुनाने लगती थी।

मगर संजय की घुटन वो समझ नहीं पा रही थी, उसकी झुनझलाहट को महसूस नहीं कर पा रही थी। वो लगी थी तरक्की की दौड़ में और अव्वल आने की कोशिश में। काम, प्रशंसा, वेतन, वेतनवृद्धि और तरक्की के सिवा उसे कुछ नहीं दिख रहा था। अब संजय शराब भी पीने लगा था, वह थोड़ा चिड़चिड़ा सा बन गया था। वैशाली को यह बात खटकने लगी थी,पर उसके पास बहस के लिए भी वक्त नहीं था। संजय रविवार शाम देर रात आकर सीधा बिस्तर पर लेट जाता। सुबह वैशाली से पहले काम पर निकल जाता।

ऐसे ही एक रविवार के दिन वैशाली लैपटॉप लेकर काम कर रही थी, संजय ने बड़े हौसले के साथ उससे बात करने की कोशिश की। "वैशाली अब हमारे शादी को चार साल हो गए है क्यों न हम बच्चों के बारे में सोचे। वैशाली ने लैपटॉप बाजू में रख दिया उसने कहा "संजय इतने दिन इंतजार किया एक साल और करो, शायद मुझे डीजीएम का प्रमोशन मिल जाए!" अब संजय का संयम टूट गया "और कितने प्रमोशन लोगी तुम, घर का, मेरा भी तो ख्याल करो। अब जो है हम उसी में सुखी हैं, मुझे और कुछ नहीं चाहिए" वैशाली ने उसे उल्टा जवाब दिया" पर मुझे प्रमोशन चाहिए और तुम तो अब तक डेप्युटी मैनेजर तक ही पहुंच गए हो और मैं मैनेजर भी बन गई। कहीं तुम्हें मेरी तरक्की से जलन तो नहीं हो रही" संजय ने कहा "बस अब बहुत हुआ" कह कर संजय दरवाजा जोर से बंद कर बाहर चला गया। देर रात करीब दो बजे उसके दोस्त उसे उठाए रूम पर ले आए। उस दिन संजय ने बहुत शराब पी ली थी। वैशाली बहुत नाराज़ हुई।

सुबह संजय उठा तो पाया कि वैशाली भी आज जल्द उठ गई है, जैसे ही उसने देखा कि संजय उठ गया है, तो उसे खरी–खोटी सुनाने लगी, संजय चुपचाप सुनता रहा। उसको शराबी कह कर ताने दे रही थी। संजय ने उससे माफी मांगी, पर वह सुनने तैयार नहीं थी। "मैं एक बड़ी कंपनी में मैनेजर हूं और मेरा पति एक शराबी, लोग क्या सोचते होंगे"! संजय बहुत ही संयम से कह दिया "अब बस हुआ क्यों न हम अलग हों जाए, तुम अपने रास्ते चली जाना, मैं अपने रास्ते चला जाऊंगा" संजय के इन शब्दों से वैशाली चकित रह गई, उसे संजय से इस बात की उम्मीद नहीं की थी। वैशाली कुछ बोल न पाई। संजय बड़ी शांति से ऑफिस के लिए निकल गया। वैशाली दिनभर उसकी बात सोचती रही। ऑफिस में भी वो खोई खोई सी थी। कैरियर या पति इन दोनों में से एक को चुनना था। रात होते होते उसने कैरियर चुन लिया। शाम को संजय मिलते ही उसने अलग होने पर रजामंदी जताई। संजय चुप–चाप रहा और निश्चिंत हो कर सो गया।

फैमिली कोर्ट में केस दाखिल की गई। कोर्ट में दलील पेश करने से पहले उनकी काउंसिलिंग हुई। काउंसलर ने देखा दोनों एक दूसरे से प्यार तो करते हैं, पर दोनों अपने बात पर अड़े हुए है। एक को अपना संसार बसाना है और एक को अपने कैरियर बनाना है। दोनों बिना कुछ विरोध किए अलग होने तैयार थे। उन्होंने देखा कि दोनों एक दूसरे को ठीक से समय नहीं दे पा रहे हैं। काउंसलिंग में 10 दिन उन्हें छुट्टी लेकर समय बिताने की सलाह दी गई, "कहीं घूम आओ, देखें अगर कोई हल निकल आए तो अच्छा है!"

दोनों बाहर आए एक दूसरे की तरफ देखा, वैशाली ने कहा मैं अभी मेल पे रिक्वेस्ट डाल देती हूं ताकि सारी फॉर्मेलिटी जल्द जल्द से पूरी होकर हम अलग हो सके। उसकी इस बात पर संजय सिर्फ हंस पड़ा। उसने अपने कार्यालय में इनफॉर्म कर दिया। दोनों घर आए वैशाली फिर लैपटॉप ले बैठी आने वाली मेल्स चेक करने लगी। उसकी छुट्टी मंजूर हुई थी पर जरूरी काम आने पर ऑनलाइन सपोर्ट देने के लिए कहा गया था।

वैशाली ने अपने सारे काम निपटा लिए। संजय गैलरी में कुछ लिख रहा था। वैशाली वहां पर आ गई, उसने पूछा "क्या लिख रहे हो"! संजय ने कहा "कुछ बीते हुए पल फिर पाने की कोशिश कर रहा हूं"! वैशाली को उसके बातों का अंदाज पता था। वैशाली ने कहा "छुट्टी मंजूर हो गई है कहां जाएं"!

संजय ने कहा शिमला चलते हैं। संजय का बचपन से सपना था कि एक बार शिमला घूम आएं, पर काम और रोजमर्रा की जिंदगी से वक्त नहीं मिल पाया था। वैशाली मान गई उसको यह सारी चीजों से जल्द–जल्द पूरी करके छुटकारा पाकर तरक्की के ऊंचाई तक पहुंचना था। दोनों फ्लाइट से चंडीगढ़ पहुंचे। संजय ने कालका से ट्रेन की सीट रिजर्व कर रखी थी। हालांकि वैशाली को बाय रोड जाना था,पर उसे अब संजय से बहस नहीं करनी थी।

चंडीगढ़ का मौसम बहुत सुहाना था। काफी ठंड थी, दोनों कालका से ट्रेन में बैठे। ट्रेन घाटियों से होकर जा रही थी। बाहर का दृश्य बहुत ही सुंदर था। बड़े–बड़े पेड़, रंग–बिरंगी तितलियां,पेडों से लदी बेलें, मुस्कुराते हुए फूल, ठंडी हवाएं। वैशाली भी अपना लैपटॉप बंद कर बाहर का दृश्य देख रही थी। अनजाने में उसके मुंह से बात निकल गई "अच्छा हुआ हम ट्रेन से जा रहे है,"! संजय हंस पड़ा और वैशाली भी। संजय फिर बाहर देखने लगा। सारी नजरें वादियों को तरफ थी, सब कुछ शांत किसी की किसी को तकलीफ नहीं, शिकायत नहीं। सब कुछ शांत। उस वादियों में गूंजती हुई खामोशी सुनाई दे रही थी।

पता नहीं चला कब शिमला आया। दोपहर हो चुकी थी। होटल चेक इन कर वहां के रेस्टोरेंट में खाना खा लिया। अब दोनों कमरे में आ गए। ठंड बढ़ती जा रही थी। बाहर आकाश में बादल छा रहे थे, आशंका थी की बर्फबारी होगी। होटल के वेटर ने यही कहा था। दोनों भी उत्सुक थे बर्फ देखने।

वैशाली शिमला आने पर थोड़ी रिलैक्स हो गई थी। कई देर से कोई फोन भी नहीं आया था। उसके चेहरे पर वही पुरानी मुस्कुराहट थी। माहौल बड़ा ही रोमांटिक था। संजय ने वैशाली का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया, वो शरमा गई पर संजय अब पूरे जोश में था उसने वैशाली को अपने सीने से लगा लिया। वैशाली भी आंखे बंद कर संजय के सीने से लिपट गई थी। वो भूल गई थी की कुछ दिनों में ही वह अलग होने वाले है। आज बड़े दिनों के बाद सारी थकावट, सारी ग्लानि दूर हो चुकी थी। बहुत सुकून सा महसूस हो रहा था। बाहर बर्फबारी हो रही थी। दोनों खिड़की के बाहर देख रहे थे। और अचानक वैशाली का फोन बजने लगा, वैशाली उसे उठाने जाने लगी तो संजय उसे रोक कर फिर अपने पास खींच लिया। मगर वैशाली ने देखा फोन उसके ऑफिस से था। सीनियर ऑफिसर का फोन था। उसने संजय को एक ओर कर दिया। वैशाली फोन उठाकर बात करने लगी। लगभग 20 मिनट तक बात करने के बाद वैशाली ने संजय से कहा "सॉरी मेरी एक फॉरेन डेलीगेट्स के साथ वीडियो कांफ्रेंस है, आप चाहे तो कहीं घूमकर आ जाओ"! थोड़ी देर पहले प्यार के रस में डूबी हुई वैशाली अब अचानक प्रोफेशनल लग रही थी। संजय अपनी पर्स और गर्म कपड़े लेकर गुस्से से बाहर चला गया।

वैशाली की मीटिंग लगभग 2 घंटे चली। मीटिंग अच्छी रही। बाहर बर्फबारी अब भी हो रही थी। वैशाली ने रेस्टोरेंट से गरम कॉफी मंगवाई। ठंड बढ़ गई थी। वैशाली कॉफी पीते–पीते सोच रही थी अगर यह वीडियो कांफ्रेंस सक्सेस होती है, तो कंपनी को बड़ा कॉन्ट्रैक्ट मिल जाएगा, उसे डीजीएम की पोस्ट मिल जाएगी। सैलरी दोगुना बढ़ेगी,आने जाने की लिए कार, अलग से केबिन और कंपनी का बड़ा सा मकान। वैशाली अपने कैरियर के सपने सजा रही थी। संजय को तो वह बिल्कुल भूल गई थी। अब अंधेरा छाने लगा था। सूरज अपना उजाला समेट रहा था। बर्फबारी बढ़ गई थी। वैशाली ने लोकल न्यूज लगा दी। सारे रास्ते पर बर्फ छाया था। घूमने आए सैलानी होटल से बाहर आकर बर्फबारी काम मजा ले रहे थे। युवक युवतियां फर्श पर गिरी बर्फ को एक दूसरे पर फेक रहे थे, हंसी मजाक मस्ती के दृश्य टेलीविजन पर दिखाई दे रहे थे। सारे रास्ते यातायात के लिए बंद हो चुके थे। रात के अब 9 बज गए थे, वैशाली को अब भूख लगने लगी थी। संजय अभी तक आया क्यों नहीं, वैशाली सोच रही थी। उतने में डोर बेल बजी वैशाली को लगा संजय आया होगा,उसने तुरंत जाकर दरवाजा खोला तो सामने रेस्टोरेंट का वेटर खड़ा था। वो ऑर्डर लेने आया था। उसने कहा "मेमसाब दस बजे

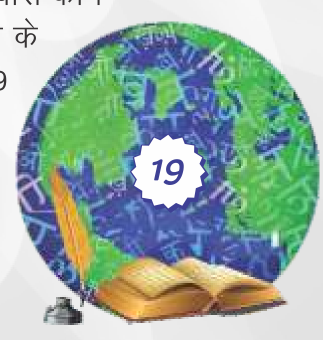

रेस्टोरेंट बंद हो जाएगा", वैशाली ने कहा मेरे पति अभी तक आए नहीं, थोड़ी देर बाद आना। वैशाली ने थोड़ी देर इंतजार किया फिर से वेटर आ गया उसने कहा "बर्फबारी बहुत हो रही है, रेस्टोरेंट हम जल्दी बंद करने वाले है"! वैशाली रेस्टोरेंट चली गई। खाना खाने के बाद उसने रिसेप्शन से अपने पति के बारे में बात की। रिसेप्शन वाले ने कहा "अगर कहीं घूमने गए होंगे तो अब आना मुश्किल है, क्योंकि सारे रास्ते अब बंद हो चुके है, कोई भी गाड़ी रास्ते से गुजर नहीं सकती कल सुबह बर्फबारी कम होने के बाद वह आ जाएंगे"! वैशाली ने कई बार संजय का मोबाइल ट्राय किया पहले वह नेटवर्क के बाहर और अब स्विच–ऑफ दिखा रहा था। वैशाली कल के उम्मीद में सोने चलीं गई। अकेली होने से देर रात तक सो नहीं पाई सुबह जब दरवाजे की खटखटाने की आवाज आई तो वह उठ गई। वैशाली ने कपड़े ठीक कर दरवाजा खोला। बाहर मैनेजर और वेटर दोनों खड़े थे। मैनेजर ने कहा कब से बेल बजा रहें थे पर आपने दरवाजा नहीं खोला अगर आप दरवाजा नहीं खोलती, तो शायद हमे लॉक तोड़ना पड़ता। वैशाली ने उनसे माफी मांगी। उसने देखा बाहर बर्फबारी और भी तेज हो गई है। संजय अभी तक नहीं आया था। उसने ब्रेकफास्ट कर लिया। फिर संजय का मोबाइल लगाया अभी भी स्विच–ऑफ दिखा रहा था। वैशाली अब डर गई थी। बर्फबारी के रुकने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे। वैशाली बेचैन होने लगी थी उसने रिसेप्शन में फोन कर संजय को खोजने के लिए रिक्वेस्ट करने लगी थी। कमरे में वह अकेली ही बैठी थी।

खिड़की में खड़ी होकर संजय की राह देख रहीं थी। होटल के ही कुछ नई–नई शादी हुए जोड़े बर्फ में खेल रहे थे, बर्फबारी का आनंद लूट रहे थे। वैशाली को भी अब अपने बीते दिन याद आ रहे थे। संजय के साथ बिताए सारे पल नजरों के सामने एक एक कर गुजर रहे थे। उसकी कॉलेज की गैदरिंग, कविताएं, फिल्में देखना, शाम को जुहू बीच पर घूमना, गोरेगांव के छोटे कश्मीर में पेड़ के छाव में दोपहर गुजारना, रात को आइसक्रीम खाते खाते घर चले जाना। उसकी आंखे अब नम हो गई थी। देखते–देखते दोपहर से शाम हो गई पर संजय नहीं आया। अब वैशाली से रहा नहीं गया। रिसेप्शन पे जाकर उसने अब मदद की गुहार लगाई। मैनेजर ने उसे पुलिस स्टेशन जाने की सलाह दी। उसने वैशाली के साथ एक आदमी भेज दिया। पुलिस स्टेशन लगभग बीस मिनट की दूरी पर था। वैशाली ने संजय की गुमशुदा होने की शिकायत दर्ज कराई।

पुलिस उसे सलाह दे रही थी कि एक दिन और रुक जाते। बर्फबारी कम हो गई तो रास्ते खुल जाएंगे। बहुत सारे सैलानी ऐसे ही कहीं न कहीं फंस जाते हैं। वैशाली सुनने के लिए तैयार नहीं थी। शिकायत दर्ज की गई थीं। वैशाली होटल लौट आई। उसकी बेचैनी बढ़ गई थी। न जाने क्यों बुरे ख्याल मन में आने लगे थे। उसके साथ बीते हुए सारे दिन रात अब याद आ रहे थे। उसके बिना हर एक पल युगों की तरह लग रहा था। मन ही मन बहुत दुखी हो रही थी। "मैने बुरा बर्ताव किया संजय के साथ"! मन ही मन वैशाली खुद को कोस रही थी। आज उसने कुछ भी खाया पिया भी नहीं था। बस दरवाजे की ओर ताकते बैठी थी। दो दिन के जुदाई में वैशाली की हालत बहुत बुरी थी।

बर्फबारी थोड़ी कम हुई थी, नगर निगम के कर्मचारी रास्ते यातायात के लिए खोल कर रहे थे। करीबन शाम के आठ बजे थे। पुलिस स्टेशन से कॉल आया, कसौली तरफ जाने वाली रास्ते पर एक व्यक्ति की लाश मिली है। उसकी पर्स में आपके पति के कंपनी का पहचान पत्र और आधार कार्ड है। आप जल्द आकर जो भी सामान मिला है वो देख लें। यह बात सुनते ही वैशाली की मानो पैरों तले जमीन खिसक गई। हाथ से मोबाइल गिर गया और सुध बुध खोई नीचे बैठ गई। उसे बड़ा सदमा लगा था।

फिर मोबाइल की घंटी बजी। वैशाली होश में आई उसके कंपनी के ऑफिसर का फोन था जो उसे प्रोमोशन की बधाई दे रहा था। वैशाली ने जो वीडियो कांफ्रेंस अटेंड कर प्रेजेंटेशन दिया था, उससे करोड़ों का कॉन्ट्रैक्ट कंपनी को मिला था। वह कुछ और कहने ही जा रहा था की वैशाली ने कॉल बंद कर दिया।

उसके सामने अब सिर्फ और सिर्फ संजय ही था। वह होटल की दूसरी मंजिल से सीढ़ियों से दौड़ते नीचे आई। वह बहुत ही डरी हुई थी। मैनेजर ने पूछा क्या हुआ मैडम पर उसने जवाब नहीं दिया। वो सीधे भागते हुए होटल से बाहर चली गई। वो अब सिर्फ भाग रही थी, पैरों में चप्पल भी नहीं थी, स्वेटर कमरे में ही रह गया था, पर न उसे ठंड लग रही थी, न पैर में पत्थर ना बर्फ चुभ रहे थे, बाल

बिखरे हुए थे। जो पाकर खो दिया है, उसे फिर पाने के कोशिश में दौड़ रही थी।

उसके ऑफिस से बधाई के मेसेज आ रहे थे। सैलरी, प्रमोशन, कार, बड़ा कमरा, बड़ी केबिन सारे मानो पीछे छूट गए थे, अब सब कुछ संजय के सामने गौण लग रहे थे। उसके आंखों के सामने सिर्फ संजय का चेहरा था। बीस मिनट का रास्ता उसे कोसों दूर लग रहा था। इतने ठंडी में भी वह पसीने से भीग गई थी। जब पुलिस स्टेशन आई तो कई सारे रिश्तेदार बर्फबारी से खोए हुए अपनों को ढूढने आए थे। वैशाली कांस्टेबल के पास पहुंची और उसने आए हुए फोन के बारे बताया। कांस्टेबल ने उसे पर्स दिखाई। संजय का ही फोटो था, साथ में उसका भी। अब वैशाली के आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी। उसकी मुंह से एक चीख सी निकल गई संजय३

कांस्टेबल उसे शिनाख्त करने के लिए सरकारी हॉस्पिटल ले गए। वैशाली के आंसू रुक नहीं रहे थे। वैशाली को लाश दिखाई गई। बहुत बुरी तरह से एक्सीडेंट हुआ था, किसी बड़े ट्रक से चेहरा रौंद दिया गया था, बड़ा डरावना दृश्य था, वैशाली लाश देखकर ही बेहोश हो गई। पता नहीं कितने देर वह बेहोश थी जब आंख खुली तो वह अपने ही होटल में थी। साथ में एक महिला कांस्टेबल थी,जो उसकी आंखों पर पानी मार रही थी। पुलिस स्टेशन ने उसका ख्याल रखने के लिए कांस्टेबल दी थी जब तक सारी सरकारी फॉर्मेलिटी पूरी नहीं हो जाती वह उसके साथ ही रहने वाली थी। जैसे ही वो होश में आई वैसे ही संजय.... संजय.... पुकारने लगी। कांस्टेबल ने उसे कहा "जो होना था वह हो गया, आपके घर इस बात की जानकारी दे दो ताकि कोई तुम्हारी मदद के लिए आ सके। मैं तुम्हारे साथ यही हूं"!

वैशाली ने रोते–रोते घर पर फोन लगाया। उतने में बाहर से डोर बेल बजी। कांस्टेबल ने दरवाजा खोला।" कौन है आप इतने रात गए क्यों आए हो"? कांस्टेबल ने आने वाले व्यक्ति से सवाल पूछा। उसने कहा "आप कौन हो और मेरी बीवी कहां है, मेरा नाम संजय है"। वैशाली के कानों पर संजय का नाम आते ही वह दरवाजे की ओर भागी, देखा तो सामने संजय खड़ा है, वैशाली पागलों जैसी उसके बाल, नाक, कान, हाथ टटोलने लगी। उसने कहा " क्या हुआ है,यह कांस्टेबल क्यों आई हुई है"? अब वैशाली सीने पर अपना सिर रखकर रोने लगी। "अरे क्या हुआ मुझे बताओ भी"! अब वैशाली उसे लाड से सीने पर मारने लगी" क्यों गए थे मुझे छोडकर, कहां गए थे तुम, अब फिर कभी जाना नहीं!" अब कांस्टेबल भी हंसने लगी। उसने सारी बातें संजय को बताई। तब संजय ने खुलासा किया कि जब वह होटल से बाहर निकला तो घूमते–घूमते उसे उसका कालेज का दोस्त मिल गया जो कसौली में रह रहा था। उसने घर आने की जिद की, साथ में वैशाली को लाने की भी बात की। तब मैंने उसे तुम्हारे मीटिंग के बारे में बताया जो दो–तीन घंटे चलने वाली थी। तो उसने अकेले आने को कहा,तो मैं भी चल दिया।

वही रास्ते में दोस्त के परिवार के लिए कुछ फ़ल लेने के लिए पर्स मार्केट में निकाला था। उसके बाद शायद पर्स रखते वक्त या दोस्त के बाइक पर ठीक ना बैठने कारण कही मेरा पर्स गिर गया था, शायद जो मृत व्यक्ति है उसी ने उठा के खुद रख दिया था। अब सारी बातें वैशाली को और कांस्टेबल को समझ में आई।

उसी समय वैशाली का फोन बजा, संजय के पिताजी थे। वैशाली ने संजय के पिताजी को फोन लगा कर, फिर काट दिया था, वैशाली ने फोन उठाया तो उन्होंने फोन क्यों कट किया उसने दोनों की खैरियत के बारे में पूछा। वैशाली ने भी उनकी खैरियत पूछी और फोन रख दिया। कॉन्स्टेबल भी चली गई। अब वैशाली को कुछ नहीं चाहिए था। उसने मोबाइल उठाया तो बहुत सारे बधाई के मेसेज आए थे। वैशाली ने संजय को अपने प्रमोशन के बारे में बताया, संजय ने भी उसे बधाई दी।

मगर वैशाली ने मोबाइल स्विच–ऑफ कर दिया। संजय उसे देखते रहा।

अब वैशाली को संजय और उसके बीच कोई नहीं चाहिए था। उस रात वैशाली संजय से एक पल भी जुदा नहीं हुई। उसके सीने से ही लिपटी रही। वैशाली और संजय दो दिन और रुके। कसौली के दोस्त को भी बुलाया गया। हंसी मजाक मस्ती में दो दिन निकल गए......

अब संजय वैशाली को मुंबई आकर हफ्ता हुआ था। वैशाली ने कंपनी को अपना इस्तीफा सौंप दिया था। एक नई कंपनी ज्वाइंन की थी जहां रविवार के दिन छुट्टी थी और न वर्क फ्रॉम होम।

संजय अब बहुत ही खुश था। उसकी खोई हुई वैशाली उसे वापस मिली थी।

आज रविवार का दिन था। संजय जल्दी उठ गया था और वैशाली सोई थी,संजय वैशाली की तरफ देख रहा था, उसकी सुनहरी जुल्फों को सहला रहा था, उसका चेहरा एक नन्हे बालक जैसा प्रतीत हो रहा था। संजय ने किचन में जाकर कॉफी बनाई और गैलरी में आकर खड़ा रहा। सूरज अब अपनी कमान संभाल रहा था। उसकी किरणें जो दो–तीन साल पहले शरीर को सुइयों जैसे चुभ रही थीं, आज गुलाब की पंखुड़ी की तरह उसके शरीर पर बरस रही थी। उगते हुए सूरज को देख उसे अपनी कविता की याद आने लगी...

"आज फिर सुबह होगी,
धरती फिर सूरज के फेरे लेगी
नए फूल फिर मुस्कुराएंगे
पत्ते फिर सरसराएंगे
फल और शाखाओं पर
पंछी बैठ इतराएंगे
भंवरे भी गुनगुनाएंगे
प्यार के मीठे बोल सुनाएंगे"....

हंसना ज़रूरी है...

एक औरत अकेले कब्रिस्तान मे एक कब्र पर बैठी थी।
एक राहगीर ने पूछा - डर नहीं लगता ?
औरत - क्यों? इसमें डरने की क्या बात है.. अंदर गर्मी लग रही थी तो बाहर आ गई।
राहगीर अब कोमा में है।

डिजिटल युग में हिंदी भाषा की वैश्विक पहचान

ऋतु लाम्बा
कॉर्पोरेट कार्यालय

11 सितंबर 1893 में अमेरिका में आयोजित धर्म संसद के दौरान स्वामी विवेकानंद ने अपने भाषण की शुरुआत हिंदी में 'अमेरिका के भाइयों और बहनों' के साथ की। शिकागो का आर्ट इंस्टीट्यूट उनके भाषण पर पूरे दो मिनट तक तालियों से गूंजता रहा। यह दिन भारत के इतिहास में गौरव और सम्मान के तौर पर दर्ज हो गया। इस भाषण से हिंदी भाषा की आभा वैश्विक पहचान में प्रसारित हो उठी थी।

हिंदी के पूर्वज

हिंदुस्तानियों ने दुनिया को अलग आधुनिक देवनागरी–हिंदी और फारसी–उर्दू से की रूप–रेखाओं से शोभित किया। आज, स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ियों के लिए, यह हिंदी भाषा, जिसने संस्कृत से प्राकृत से अपभ्रंश (संस्कृत का सरल संस्करण) तक का मार्ग लिया और अवधी, ब्रज और मैथिली की स्थानीय बोलियों से प्रभावित होतो हुए आगे बढ़ी। इसे देखकर, हिंदुओं ने संस्कृतनिष्ठ भाषा का विकास किया जो कालांतर में हिंदी बनी। इस तरह के विशाल इतिहास और गहरी सांस्कृतिक जड़ों वाली यह भाषा अब कई देशों में अपने प्रभाव के साथ, दुनिया भर में पहचानी जाती है।

विश्व स्तर पर नमस्ते की गूंज

जब भी विदेशी भारतीय को देखते हैं तो वे उन्हें हाथ जोड़कर और थोड़ा सा झुककर नमस्ते के रूप में अभिवादन करते हैं। कोविड रूपी वैश्विक महामारी ने तो हमारे नमस्ते का मान–सम्मान इतना बढ़ा दिया है कि विदेशी उच्चाधिकारी अब भी हाथ मिलाने के बजाय नमस्ते कहना पसंद करते हैं।

डिजिटल युग में हिंदी

पिछले एक दशक में, भारत में बड़ी संख्या में लोग मोबाइल फोन और इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। डिजिटल क्रांति के युग में हिंदी का दायरा और बढ़ा है। पहले अखबार, पत्रिकाएं, टीवी, सिनेमा, काव्य गोष्ठियां और साहित्य सम्मेलन ही केवल हिंदी के प्रचार–प्रसार के बड़े माध्यम थे। लेकिन अब फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और ब्लॉग भी हिंदी को समृद्ध बनाने के सशक्त माध्यम बनकर उभरे हैं। इस प्रकार हिंदी सामग्री की बढ़ती मांग ने ब्लॉग, समाचार लेख और सोशल मीडिया पोस्ट को शामिल करते हुए हिंदी में सामग्री की विस्तृत श्रृंखला के निर्माण को प्रेरित किया। 2011 के बाद से भारत में हिंदी सामग्री की खपत 94% से अधिक बढ़ी है। डिजिटल युग में इंटरनेट पर अंग्रेजी भाषा के मुकाबले हिंदी भाषा के प्रभाव का विश्लेषण किया जा सकता है जिसमें ऑनलाइन खरीदारी, सोशल मीडिया और नेटवर्किंग, बीजशब्द से खोज, आवाज से खोज आदि शामिल हैं।

गूगल द्वारा हिंदी भाषा को मान्यता

गूगल ने 2007 में भारत में गूगल लैब का शुभारंभ किया। ये इन गूगल लैब भारत में लोगों को हिंदी भाषा में खोज करने और परिणाम प्राप्त करने की तकनीक है। ऐसा ही एक एप्लिकेशन गूगल असिस्टेंट और एलेक्सा जैसे स्मार्ट डिवाइस हिंदी में वॉयस मैसेज को समझने और उसका जवाब देने में सक्षम हैं। यह एप्लीकेशन विभिन्न भाषाओं के महत्व और ऑनलाइन स्पेस में उनके उपयोग को समझने में मदद करता है। ऑनलाइन शॉपिंग की बात करें तो खरीदार के लिए ऑर्डर देने या खरीदारी करने के लिए उत्पादों को खोजने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसीलिए अब हिंदी का दायरा सिर्फ राजभाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि हिंदी देश–दुनिया तक पहुंच रही है।

हिंदी भाषा में सोशल मीडिया प्लेटफार्म

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर हम विज्ञापन, ट्वीट और राय पोस्ट करने के लिए हिंदी भाषा के उपयोग में वृद्धि देख रहे हैं। हिंदी भाषा की लोकप्रियता दिनोंदिन बाजार और सोशल मीडिया में तेजी से बढ़ रही है और हिंदी की बढ़ती मजबूती को देखते हुए अमेजॉन, क्विकर,ऑलल्स जैसे बड़े इकॉमर्स प्लेटफॉर्म ने अपने ऐप का हिंदी संस्करण प्रारंभ किया है। हिंदी भाषी लोगों द्वारा तेजी से उपयोग किया जा रहे यूट्यूब, गूगल जैसे ऐप हिंदी में उपयोगकर्ताओं के लिए तरह–तरह की सामग्री पेश कर रहे हैं जो उन्हें उंचाईयों की अगली स्तर पर ले जा रही है।

भाषण पहचान प्रणाली का मूल सिद्धांत ध्वनिक संकेतों की पहचान करना है और उन्हें शब्दों में परिवर्तित करना है। इसके लिए एक स्वचालित प्रणाली विकसित की गई है जो उपयोगकर्ता से हिंदी प्रश्न को स्वीकार करती है, वेब पर किए गए प्रश्न के बीज शब्द खोजती है और तदनुसार परिणाम दिखाती है। इसके लिए 3145 शब्दों का द्विभाषी शब्दकोश तैयार किया गया। ध्वनिक भाषण संकेतों को शब्दों में बदलने की तकनीक डिजाइन की गई। शब्दकोश लक्ष्य भाषा से स्रोत भाषा का पीओएस रखता है और हिंदी भाषा के लिए सीएफजी व्याकरण आधारित मॉडल विकसित किया गया।

हिंदी के लिए वाक् पहचान प्रणाली विकसित की गई अंग्रेजी सामग्री को हिंदी में बोले जाने वाले पाठ में बदलता है। एक बार बोले गए पाठ की पहचान हो जाने के बाद, रोमन हिंदी पाठ उत्पन्न होता है जिसे बाद में रूपांतरित किया जाता है। अलग–अलग अंग्रेजी शब्दों की मैपिंग करने के बाद, इसे व्याकरणिक रूप से सही अंग्रेजी वाक्य बनाने के लिए शब्दों की पुनर्व्यवस्था की जाती है। सॉफ्टवेयर के लिए विकसित व्याकरण के नियमों द्वारा यह संभव होता है। व्याकरण के नियम हिंदी व्याकरण को अंग्रेज़ी व्याकरण में पुनर्क्रमित करते हैं।

उपयोगकर्ता जो प्रश्न पूछेगा, सिस्टम उसी के अनुसार प्रतिक्रिया देगा जैसे प्रयोक्ता – बेंगलुरू में सूर्योदय और सूर्यास्त का समय क्या है? सिस्टम – सूर्योदय 06:02 बजे होगा और सूर्यास्त 18:34 बजे होगा। प्रयोक्ता – WHO का क्या मतलब है। सिस्टम – WHO का मतलब वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन है। प्रयोक्ता – भारत की राजधानी क्या है। सिस्टम – भारत की राजधानी दिल्ली है।

संक्षेप में कहें तो आज हिंदी भारत की राजभाषा ही नहीं, देश की संपर्क भाषा ही नहीं बल्कि आभासी दुनिया की भी भाषा बन चुकी है। अनेक देशों में इसके विद्यमान और बढ़ते प्रयोग के देखते हुए यदि हम हिंदी को विश्व भाषा कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।

विश्व भाषा के रूप में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता

श्यामलाल दास
चेन्नै

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया था। इसी विशेषता के कारण हिंदी को भारत की राजभाषा का सम्मान प्राप्त है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा होने के साथ–साथ विश्व की पुरातन भाषाओं में से एक है। यह भाषा आज हमारे देश में भारत सरकार के सभी केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त की जा रही है। जो कार्मिक अहिंदी भाषी क्षेत्र से होते है उन्हें हिंदी भाषा का ज्ञान भारत सरकार के विभिन्न हिंदी शिक्षण कार्यक्रम जैसे – प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत हिंदी प्रशिक्षण द्वारा उन्हें हिंदी में प्रशिक्षित किया जा रहा है। इससे उन्हें अपने कार्यालय में हिंदी भाषा का प्रयोग करने, हिंदी में काम करने में आसानी तो होती ही है, साथ में जब वे अपने राज्य जैसे अहिंदी भाषी राज्य तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, ओडिशा आदि जैसे क्षेत्रों से बाहर जाते हैं तब उन्हें हिंदी भाषा की मदद से भाषा सम्प्रेषण कर अपने काम करने में आसानी होती है। यही हिंदी भाषा की सबसे बढ़ी उपलब्धि है। हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। हम जितना अधिक हिंदी और प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग शिक्षा, ज्ञान विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि में करेंगे, उतनी ही तेज गति से भारत का विकास होगा।

हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और इस भाषा को समझने वाले लोगों की संख्या पूरे विश्व में 1 अरब से भी ज्यादा है। अतः हिंदी में रोजगार की संभावनाएं बढ़ती जा रही हैं। वह समय गया जब लोग कहते थे कि अंग्रेजी रोजगार की भाषा है। आज विदेशों में अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही हैं। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

हिंदी भारतवर्ष की विविधता में एकता का भी प्रतीक है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, पंडित नेहरु, मौलाना अबुल कलाम आजाद, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार पटेल, डॉ. अंबेडकर जैसे महापुरुषों ने हिंदी को भारत की संपर्क भाषा के रूप में अपनाकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी।

हिंदी को विविध क्षेत्रों में विकसित करने में हिंदी अनुवाद ने एक बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। हिंदी और भारतीय प्रांतीय भाषाओं के साहित्यकार के परस्पर अनुवाद को बढ़ावा देने से हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं में संबंध अधिक मजबूत होंगे। विश्व हिंदी दिवस जो प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व स्तर पर मनाया जाता है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

भारत सरकार द्वारा विकास योजनाएं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। राजभाषा हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। विश्व स्तर पर हिंदी को मान्यता देने में खेल जगत, भारतीय फिल्में, अंतर्राष्ट्रीय बैठकें, विदेशों में हिंदी शिक्षण संस्थानों का खोला जाना आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विश्व हिंदी सचिवालय विदेशों

में हिंदी का प्रचार–प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए प्रयासरत है।

आज के समय में हमारे प्रधानमंत्री जब भी देश से बाहर जाते हैं, वहाँ हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं जो अपने आप में राजभाषा हिंदी को विश्व भाषा बनाने में एक अहम भूमिका निभाता है। हिंदी भाषा को विश्व भाषा की ओर अग्रसर भाषा इसलिए भी कह सकते हैं क्यूंकि यह एक ऐसी भाषा है जो अधिकाधिक लोगों द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है।

इंटरनेट के इस युग में हिंदी को वैश्विक स्तर पर मान्यता मिल रही है। इसी प्रकार देश में कंप्यूटर के आगमन के पश्चात हिंदी भाषा के विकास की कल्पना संदिग्ध होने लगी थी, परंतु कालांतर में यह अपना स्थान कंप्यूटर के अनुप्रयोगों में भी बढ़ा चुकी है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आईबीएम तथा ओरेकल जैसे कंपनियां भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। इंटरनेट के इस दौर में हिंदी भाषा अधिक से अधिक वेबसाइट हेतु अंग्रेजी भाषा के अलावा एक वैकल्पिक भाषा बनकर उभरी है। पराधीन भारत में हिंदी ही संपूर्ण राष्ट्र में समझी जाने वाली एक मात्र भाषा थी। इसी भाषा के बल पर आंदोलन का सपना साकार हुआ एवं भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बना। महात्मा गांधी ने कहा था "राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।"

हिंदी के वैश्विक विस्तार के कारण हिंदी में लिखे गए उपन्यास की लोकप्रियता विश्व स्तर पर हो रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों के बीच रोजगार के नए अवसर का सृजन हो रहा है। शिक्षा, रोजगार, साहित्य, पर्यटन एवं तकनीकी क्षेत्र में हम आत्मनिर्भर हो रहे हैं एवं आर्थिक दृष्टिकोण से राजभाषा हिंदी के प्रभाव के कारण विदेशों के साथ व्यापारिक रिश्ते भी मजबूत हो रहे हैं।

सुंदरता (प्रेरक प्रसंग)

एक कौआ सोचने लगा कि पंछियों में मैं सबसे ज्यादा कुरूप हूँ। न तो मेरी आवाज ही अच्छी है, न ही मेरे पंख सुंदर हैं। मैं काला–कलूटा हूँ। ऐसा सोचने से उसके अंदर हीनभावना भरने लगी और वह दुखी रहने लगा। एक दिन एक बगुले ने उसे उदास देखा तो उसकी उदासी का कारण पूछा। कौवे ने कहा – तुम कितने सुंदर हो, गोरे–चिट्टे हो, मैं तो बिल्कुल स्याह वर्ण का हूँ। मेरा तो जीना ही बेकार है। बगुला बोला – दोस्त मैं कहाँ सुंदर हूँ। मैं जब तोते को देखता हूँ, तो यही सोचता हूँ कि मेरे पास हरे पंख और लाल चोंच क्यों नहीं है। अब कौए में सुन्दरता को जानने की उत्सुकता बढ़ी। वह तोते के पास गया।

बोला – तुम इतने सुन्दर हो, तुम तो बहुत खुश होते होगे?

तोता बोला– खुश तो था लेकिन जब मैंने मोर को देखा, तब से बहुत दुखी हूँ, क्योंकि वह बहुत सुन्दर होता है। कौआ मोर को ढूंढने लगा, लेकिन जंगल में कहीं मोर नहीं मिला। जंगल के पक्षियों ने बताया कि सारे मोर चिड़ियाघर वाले पकड़ कर ले गए हैं। कौआ चिड़ियाघर गया, वहाँ एक पिंजरे में बंद मोर से जब उसकी सुंदरता की बात की, तो मोर रोने लगा। और बोला – शुक्र मनाओ कि तुम सुंदर नहीं हो, तभी आजादी से घूम रहे हो वरना मेरी तरह किसी पिंजरे में बंद होते।

सीख – दूसरों से तुलना करके दु:खी होना बुद्धिमानी नहीं है। असली सुंदरता तो हमारे अच्छे कार्यों से आती है।

वर्तमान परिदृश्य में रक्षा उत्पादों का निर्यात

श्यामसुंदर झा
सीआरएल, बेंगलूरु

प्रस्तावना–

वर्तमान में भारत दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है परंतु ऐसी परिस्थितियों में भी भारत अभी तक रक्षा उत्पादकों के निर्माण में पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं है।

रक्षा उत्पादन एक ऐसा क्षेत्र है जहां भारत को आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी है। आमतौर पर भारत रक्षा उपकरणों को विदेशों से आयात करता है, जैसे हम सभी जानते हैं S–400 को भारत ने रूस से आयात किया है, जिसकी कीमत लगभग चालीस हज़ार करोड़ है। ये सारा पैसा भारत के फोरेक्स रिजर्व से खर्च किया जाता है और ये भारत की अर्थव्यवस्था पर बहुत बड़ा भार डालता है। इस पैसे का उपयोग भारत अपनी मूलभूत सुविधाओं को सुधारने में वहन कर सकता है, जैसे स्वास्थ्य चिकित्सा सुविधाओं, शिक्षा के क्षेत्र में आदि।

रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में रक्षा मंत्रालय और प्रधानमंत्री द्वारा उठाए गए कदम –

सन 2020 में रक्षा मंत्रालय ने 101 रक्षा उत्पादों की सूची तैयार की जिसमें उन्होंने 101 रक्षा उत्पादों के आयात पर रोक लगा दी। भारत का ये कदम घरेलू रक्षा उत्पादक निर्माता कंपनियों को सशक्त बनाने, आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देने की दिशा में बहुत जरूरी था। इसके बाद ही 108 रक्षा उत्पादकों की एक और सूची जो सन 2022 में रक्षा मंत्रालय के द्वारा जारी की गई। इससे स्पष्ट होता है कि भारत रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना और इन रक्षा उत्पादकों को आयात की जगह निर्यात करने की ओर कदम बढ़ाना चाहता है।

डीपीईपीपी का गठन सन 2018 में रक्षा मंत्रालय द्वारा किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत में रक्षा उत्पादकों के आयात पर नियंत्रण करना है।

भारत की रक्षा उत्पादन में कमजोर परिस्थिति के कारण– निम्नलिखित कारण भारत की रक्षा उत्पादन में कमजोर स्थिति को दर्शाते हैं–

1. रक्षा उत्पादक उद्यमों एवं अनुसंधान प्रयोगशालाओं और अंतरिम उपयोगकर्ताओं के बीच बातचीत की कमी।
2. अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं में पर्याप्त निवेश न करना।
3. रक्षा उत्पादक कंपनियों एवं अनुसंधान प्रयोगशालाओं द्वारा परियोजनाओं को समाप्त करने में देरी करना।
4. तकनीकी निपुण एवं पर्याप्त शिक्षित कर्मचारियों का उचित चयन न कर पाना आदि।
5. ऐसे और भी कई कारण है जिसकी वजह से भारत विश्वस्तरीय परिस्थितियों में रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में खुद को मजबूत स्थिति में नहीं ला पाता है।

भारत में विकसित रक्षा उत्पादक –

भारत में पाँच बड़ी रक्षा उत्पादक कंपनियाँ जैसे भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, भारत डायनामिक्स लिमिटेड और हिंदुस्तान ऐरोनोटिक्स लिमिटेड जैसी कई कंपनियां हैं जो दुनिया की 100 प्रमुख कंपनियों की सूची में अपनी जगह बनाने में सक्षम हुई हैं।

एचएएल ने हाल ही में हल्के लड़ाकू विमान तेजस और हल्के लड़ाकू हेलीकाप्टर ध्रुव को भारतीय वायुसेना में सम्मिलित किया है। फ़िलिपींस एवं इजिप्ट ने तेजस को खरीदने में अपनी रुचि दिखाई है। भारत इन रक्षा उत्पादकों का निर्माण कर अपने फोरेक्स रिजर्व को बचा सकता है और विदेशों से आयात की निर्भरता को कम कर सकता है।

रक्षा क्षेत्र एक बहुत बड़ा व्यवसाय क्षेत्र है। अमेरिका, फ्रांस एवं रूस जैसी दुनिया की बड़ी–बड़ी अर्थव्यवस्थाएं इस व्यवसाय पर निर्भर करती है। ऐसे बड़े देशों की अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा भाग रक्षा उत्पादन एवं विकास क्षेत्र के व्यवसाय पर निर्भर करता है।

अगर भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की बात करें तो बीईएल भी रक्षा उत्पाद उपकरणों के उत्पादन में पीछे नहीं है। बीईएल ने भारतीय नौसेना के जहाजों को वारफेयर सूट, स्वाति वेपन लोकेटिंग रेडार, आर्मेनिया को प्रदान किया है। इससे विदेशों पर भारत की निर्भरता कुछ हद तक कम होने के साथ–साथ अपने फोरेक्स रिजर्व को भी बचाने में सफलता मिली है।

रक्षा उत्पादकों के निर्यात में भारत की स्थिति –

भारत में रक्षा उत्पादों के निर्यात की स्थिति में काफी हद तक सुधार हुआ है। भारत ने ब्रह्मोस मिसाइल फिलीपींस को निर्यात कर विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है, इससे पहले भारत रक्षा उत्पादकों में से सिर्फ रक्षा जैकेट, हेलमेट, बॉडी कवर सूट ही निर्यात करता था लेकिन अब भारत आक्रमणकारी हथियारों का भी निर्यात करने में सक्षम हुआ है।

आने वाले समय में भारत तेजस विमान, हेलीकाप्टर, मिसाइल आदि को निर्यात कर विश्वस्तर पर अपनी स्थिति को मजबूत कर दुनिया को दिखाएगा कि भारत रक्षा उत्पादन व्यवसाय में भी दुनिया से पीछे नहीं है।

उपसंहार –

भारत की स्थिति रक्षा उत्पादन व्यवसाय के क्षेत्र में पहले से मजबूत हुई है, भारत आक्रमणकारी हथियार स्वतः बनाकर दुनिया में अपना डंका बजा चुका है। भारत ऐसी बहुत सारी दूरगामी परियोजनाओं पर काम कर रहा है जो भविष्य को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं। अगर भारत इन परियोजनाओं का सफलता पूर्वक परीक्षण कर लेता है तो भारत इन्हें खुद उपयोग करने के साथ–साथ निर्यात भी कर सकता है। भारत की निर्यात में मजबूत स्थिति भारतीय अर्थवयवस्था को निश्चित रूप से मजबूती प्रदान करेगी।

जय हिंद।

ममता रानी
पंचकुला

राजभाषा बने राष्ट्रभाषा

सब भाषाओं में हिंदी का सर्वोच्च स्थान है,
राजभाषा बने राष्ट्रभाषा, हम सब का अरमान है।

सत्यम शिवम् सुंदरम के उद्घोषों का आह्वान है,
वेद उपनिषद और गीता का भरा इसमें ज्ञान है।

दूर सदूर देशों में भी इसने कार्य किए महान हैं,
विदेशों में भी इसकी बदौलत स्थापित हुए कीर्तिमान है।

मन के भावों पर आधारित जीवन की पहचान है,
घर परिवार व्यवहार में भी इसने किया निर्माण है।

चुनाव, शिक्षण, प्रसारण में हिंदी का बढ़ता योगदान है,
अंतराजाल, गतिमान, प्रशासनिक सेवाओं में जीता जागता प्रमाण है।

आओ करें भरसक प्रयत्न, राजभाषा को राष्ट्रभाषा बनाने में,
चूक न जाए कोई मंशा, इस अभियान को सफल बनाने में।

"हिंसा नहीं हैं कोई हल"

धीरज, दया, क्षमा अपनाओ बढ़े प्यार और आत्मबल,
किसी समस्या का किचिंत भी "हिंसा" नहीं है कोई हल,
अहम वहम मिथकों से होती मानवता आंतकित है।

विरोध समर्थन कानून हो जो संविधान में अंकित है
संचित है संस्कार जो नहीं जाए कुंठा में जल,
किसी समस्या का किचिंत भी हिंसा नहीं हैं कोई हल

बेखबर परिणामों से जो जन कुत्सित राह चलते हैं
अक्सर ऐसे बहके मानव अपनों को ही छलते हैं।
मलते हैं आखिर हाथों को जो सोचे नहीं क्या होगा कल
किसी समस्या का किचिंत भी हिंसा नहीं है कोई हल
हिंसा की जब जब भारत में आहट सुनाई देती है,
हर भारत वासी को झकझोर सदा यह रख देती है
कहती है वसुधा भारत की, "ये हिंसा सदा को जाए टल
किसी समस्या का किचिंत भी, "हिंसा नहीं है कोई हल।

खेल जगत में भारत का बढ़ता पायदान

केता शिवा
सीआरएल, बेंगलूरु

खेलेगा भारत तभी बढ़ेगा भारत

प्रस्तावना – हमारा भारत आजादी के 75 वर्ष पूरा कर चुका है। आज पूरे विश्व में भारत की गिनती एक विकासशील देश की श्रेणी में की जाती है, जो कि दिन प्रतिदिन विकसित देश बनने की ओर अग्रसर है। इस 75 साल के सफर में भारत ने शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, रक्षा और आर्थिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। साथ ही खेल जगत में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से भारत को गौरवान्वित किया है।

खेल जगत में भारत की स्थिति–

क्रिकेट के क्षेत्र में महाशक्ति बनता भारत – भारत का क्रिकेट में अदभुत प्रदर्शन सर्वविदित है। पिछले दो दशकों में भारतीय क्रिकेट टीम ने एम एस धोनी के नेतृत्व में एक दिवसीय खेल में दो विश्व कप एवं टी20 क्रिकेट में एक बार विश्व कप हासिल किया है। साथ ही आई सी चैम्पियन्स ट्रॉफी में एक बार विजेता बन चुका है ।

हॉकी में भारत का स्वर्णिम युग– आजादी के बाद से अब तक भारतीय हॉकी खिलाड़ियों ने आठ स्वर्ण पदक हासिल किया है लेकिन 1980 के बाद भारत का हॉकी में काफी खराब प्रदर्शन रहा है। लेकिन हाल ही कुछ वर्षों में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन में बहुत सुधार देखा गया जिसके चलते 41 वर्ष के सूखेपन के बाद भारतीय हॉकी ने बीजिंग ओलंपिक में पदक प्राप्त किया। हॉकी में भारत जिस कौशल के साथ खेल रहा है उससे लगता है कि हम जल्द ही अपना पुराना गौरव हासिल कर पाएंगे।

टेनिस में भारत का गिरता स्तर – पिछले दशक में हमारे खिलाड़ियों ने जैसे लिएंडर पायस, सानिया मिर्जा ने ग्रांडस्लेम ट्राफी जीता। जिसके बाद टेनिस में भारत का प्रदर्शन गिरता चला गया। 2017 के बाद से भारत ने कोई भी पदक हासिल नही किया। आज वरिष्ठ खिलाड़ियों की स्थिति दयनीय है साथ ही कनिष्ठ वर्ग का प्रदर्शन भी इतना अच्छा नहीं रहा है। कहा जा सकता है कि टेनिस में भारत का भविष्य अँधेरे में है।

फुटबाल में भारत – आजादी के बाद भारत ने फुटबाल में बहुत ही शानदार प्रदर्शन किया। लेकिन पिछले कुछ दशकों में भारतीय फुटबाल की स्थिति बड़ी दयनीय रही है। हाल ऐसा है कि भारतीय फुटबाल टीम पिछले कुछ दशकों में फीफा विश्व कप खेलने के लिए ही स्थान प्राप्त नहीं कर पा रही है, जीतना तो दूसरी बात है।

कुश्ती और बक्सिंग में उभरता भारत – आज भारत कुश्ती और बाक्सिंग में भी पदक ला रहा है। सन 2008 में सुशील कुमार के ओलम्पिक में कांस्य पदक हासिल करने के बाद से देश में कुश्ती के क्षेत्र में एक नई क्रांति आई है। जिसके बाद से ऐसा कोई वर्ष नहीं गया जब भारत ने कोई पदक हासिल न किया हो।

बाक्सिंग के क्षेत्र में भी मेरीकॉम और सुरेन्द्र सिंह ने स्वर्ण पदक जीत कर युवाओं में नई उर्जा का संचार किया। एथेलेटिक्स के क्षेत्र में भी नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलम्पिक में पहला स्वर्ण पदक जीत कर एथेलेटिक्स में भी भारत का परचम लहराया है। ऐसे ही कामनवेल्थ खेले में भी हाल ही में हमने तीन जम्प, लाँग जम्प और हाई जम्प जैसे खेलों में पदक जीत कर भारत का गौरव बढ़ाया है।

खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार की पहल –

फिट इंडिया आंदोलन
खेलो इंडिया
खेल प्रशिक्षण केंद्र
राष्ट्रीय पुरस्कार योजना
प्रतिभा पोर्टल
टारगेट ओलम्पिक आदि

आज भारत के 75 आजादी के वर्षों बाद खेलों में बहुत सुधार हुआ है फिर भी भारत को खेल क्षेत्र में अग्रणी बनने के लिए प्रशिक्षण एवं अन्तर्राष्ट्रीय अभ्यास में भी भारी निवेश की आवश्यकता है। बच्चों को विद्यालय से ही खेलों के महत्व को समझाने की आवश्यकता है। भारत देश में बहुत प्रतिभा छुपी हुई है जिसे गाँव–गाँव व कस्बों से खोजकर निकालने की आवश्यकता है।

जय हिन्द जय भारत ।

बाल प्रतिभा (चित्रकारी)

देश दुनिया में हिंदी का वर्चस्व

अंशु मोहन
कॉर्पोरेट मानक

हिंदी, भारत की आधिकारिक भाषा, न केवल देश में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, बल्कि यह दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। दुनिया भर में 55 करोड़ से अधिक वक्ताओं के साथ, हिंदी अपने आप में एक वैश्विक भाषा है। हाल के दिनों में, हिंदी गैर–देशी वक्ताओं के बीच, विशेष रूप से दक्षिण एशिया और उसके बाहर पसंद की भाषा के रूप में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। यह लेख एक राष्ट्रीय और विश्व भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका, डिजिटल दुनिया में इसकी बढ़ती प्रमुखता, इसकी समृद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत, और वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने में आने वाली चुनौतियों और अवसरों के बारे में है।

1. हिंदी भाषा का परिचय

हिंदी की उत्पत्ति – हिंदी एक इंडो–आर्यन भाषा है जो भारत के उत्तरी क्षेत्रों में उत्पन्न हुई है। यह संस्कृत भाषा से विकसित हुई और 7वीं शताब्दी के आसपास उभरी। हिंदी उर्दू से घनिष्ठ रूप से संबंधित है, जो एक ही पूर्वज से विकसित हुई है, और दोनों भाषाएं व्याकरण, शब्दावली और उच्चारण के मामले में कई समानताएं रखती हैं।

देवनागरी लिपि – हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी लिपि में 33 व्यंजन और 11 स्वर हैं और इसका उपयोग संस्कृत, मराठी और नेपाली जैसी कई अन्य भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता है।

हिंदी बोलियाँ – हिंदी की कई बोलियाँ हैं और इन बोलियों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है – मानक हिंदी बोली और क्षेत्रीय हिंदी बोलियाँ। मानक हिंदी बोली खड़ी बोली पर आधारित है। कुछ लोकप्रिय क्षेत्रीय हिंदी बोलियों में ब्रज, बुंदेली, अवधी और हरियाणवी शामिल हैं।

2 . राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का महत्व

भारतीय संविधान में हिंदी की भूमिका – हिंदी को अंग्रेजी के साथ–साथ भारत की राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारतीय संविधान हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता देता है और भारत के सभी लोगों के लिए अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिंदी के विकास का प्रावधान करता है।

हिंदी एक एकीकृत कारक के रूप में – हिंदी भारत में बड़ी संख्या में लोगों द्वारा बोली जाती है और यह एक ऐसे देश में एकीकृत कारक है जो विविध भाषाई और सांस्कृतिक समूहों का घर है। हिंदी का उपयोग भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संचार की एक आम भाषा के रूप में किया जाता है और इसने राष्ट्रीय एकता और एकीकरण के विचार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिंदी – भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिंदी भी एक महत्वपूर्ण विषय है। इसे देश भर के स्कूलों में पहली भाषा या दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के उपयोग ने उन लोगों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाने में मदद की है जो अंग्रेजी में कुशल नहीं हैं।

3. हिंदी एक वैश्विक भाषा के रूप में

दुनिया भर में हिंदी भाषी आबादी – हिंदी दुनिया भर में लगभग 55 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है, जो इसे दुनिया की चौथी सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा बनाती है। हिंदी भारत, फिजी और मॉरीशस में एक आधिकारिक भाषा है और यह नेपाल, बांग्लादेश और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में भी व्यापक रूप से बोली जाती है। हालांकि, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम और ऑस्ट्रेलिया सहित दुनिया के अन्य हिस्सों में भी महत्वपूर्ण हिंदी भाषी आबादी है।

अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में हिंदी – हिंदी को अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की भाषा के रूप में पहचान मिली है। इसका उपयोग भारत के प्रतिनिधियों द्वारा संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों में किया जाता है और कई देशों में इसे विदेशी भाषा के रूप में भी पढ़ाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में हिंदी के प्रयोग से भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को बढ़ावा देने में मदद मिली है।

4. डिजिटल दुनिया में हिंदी

इंटरनेट पर हिंदी सामग्री – इंटरनेट के उपयोग से हिंदी भाषा की ऑनलाइन सामग्री की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है। हिंदी भाषा की वेबसाइट, ब्लॉग और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने हिंदी भाषियों को अपनी मूल भाषा में खुद को अभिव्यक्त करने का मंच दिया है।

सोशल मीडिया में हिंदी – फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोग ने भी हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में मदद की है। इन प्लेटफार्मों पर हिंदी में संवाद करने की क्षमता ने डिजिटल डिवाइड को पाटने में मदद की है और हिंदी बोलने वालों को वैश्विक मंच पर एक आवाज दी है।

5. हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक प्रभाव

हिंदी साहित्य की – हिंदी साहित्य अपनी समृद्धि और विविधता के लिए जाना जाता है। इसका एक लंबा और समृद्ध इतिहास है, मध्यकाल से जब इसे देवनागरी लिपि में लिखा जाता था। हिंदी साहित्य ने हमें अनेक कुछ महान लेखक, कवि और नाटककार जैसे प्रेमचंद, कबीर, तुलसीदास दिए हैं। इन प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के कार्यों ने हिंदी साहित्य को भारत के सबसे प्रमुख सांस्कृतिक प्रतीकों में से एक बना दिया है।

हिंदी सिनेमा और मनोरंजन उद्योग – हिंदी फिल्म उद्योग, जिसे आमतौर पर बॉलीवुड के रूप में जाना जाता है, भारतीय मनोरंजन उद्योग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह महत्वपूर्ण राजस्व उत्पन्न करता है और इसके असंख्य अंतरराष्ट्रीय प्रशंसक हैं। हिंदी सिनेमा ने दुनिया भर में भारतीय संस्कृति, भाषा और परंपराओं को बढ़ावा देने में मदद की है।

6. हिंदी को विश्वभाषा के रूप में प्रचारित करने में चुनौतियाँ और अवसर

अंग्रेजी और अन्य भाषाओं से प्रतियोगिता – हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रचारित करने में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह है कि यह अंग्रेजी और अन्य प्रमुख भाषाओं से प्रतिस्पर्धा का सामना कर रही है। अंग्रेजी दुनिया के कई हिस्सों में संचार की प्राथमिक भाषा बन गई है और वैश्विक पहुंच के मामले में हिंदी से आगे है।

हिंदी को विदेशी भाषा के तौर पर पढ़ाना – हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में बढ़ावा देने में एक और चुनौती विदेशी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। गैर–देशी वक्ताओं के लिए हिंदी को बढ़ावा देने में संसाधनों और शिक्षण सामग्री की कमी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

7. वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी की संभावनाएं

भारत का बढ़ता अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव – भारत का बढ़ता अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव हिंदी के लिए एक वैश्विक भाषा बनने का एक बड़ा अवसर प्रस्तुत करता है। जैसे–जैसे भारत एक आर्थिक और सामरिक शक्ति के रूप में विकसित हो रहा है, इसकी भाषा और संस्कृति का दुनिया भर में प्रभाव पड़ने की संभावना है।

वैश्विक व्यावसायिक भाषा के रूप में हिंदी की क्षमता – भारत का व्यापारिक समुदाय अंतरराष्ट्रीय बाजार में संचार के साधन के रूप में हिंदी का तेजी से उपयोग कर रहा है। जैसे–जैसे भारत एक वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है, हिंदी व्यापार की दुनिया में एक महत्वपूर्ण भाषा बन रही है।

8. निष्कर्ष

हिंदी का एक समृद्ध सांस्कृतिक और साहित्यिक इतिहास है और इसमें विश्व भाषा बनने की क्षमता है। हिंदी भाषा को अंग्रेजी से प्रतिस्पर्धा और शिक्षण में संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन भारत का बढ़ता अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव और व्यावसायिक भाषा के रूप में हिंदी की क्षमता विश्व स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने के अवसर प्रस्तुत करती है। सही प्रयासों और समर्थन से, हिंदी वैश्विक भाषाई परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अंत में, हिंदी सिर्फ एक भाषा से अधिक है, यह एक सांस्कृतिक पहचान है और दुनिया भर में लाखों लोगों के लिए राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। जैसे–जैसे हिंदी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता हासिल कर रही है, इसमें एक सच्ची वैश्विक भाषा बनने की क्षमता बढ़ रही है। वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने के कई तरीके हैं, जैसे खुद हिंदी सीखना, अपने समुदाय में हिंदी भाषा की कक्षाओं और संसाधनों को बढ़ावा देना, और अंतरराष्ट्रीय संगठनों और राजनयिक पहलों में हिंदी को शामिल करने की वकालत करना। हिंदी भाषा के मीडिया, साहित्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का समर्थन करने से भी भाषा की प्रोफाइल को बढ़ाने और दुनिया भर में इसके उपयोग और प्रशंसा को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

इसके उपयोग और सीखने को बढ़ावा देने के ठोस प्रयासों के साथ, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हिंदी दुनिया की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का एक जीवंत, गतिशील और मूल्यवान हिस्सा बनी रहे। आइए, हम हिंदी की भावना को जीवित रखें और अच्छी तरह से एक अधिक परस्पर और विविध दुनिया की ओर बढ़ें।

वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाएँ

1		40	41		■	2	42	■	3	43		44	■	45
	■	4			■	5		■	6		■	7	46	
	■		■		■	8		■	■	9	46			■
10	47			■	11		■	12	48			■	■	■
■	13		■	14		■	49	■		■	15			50
51	■	■	16			52		■	17		■	■	■	
18	53		■		■	19		■	■	■	20	54		
■	21		55		■	■	■	22	56		■		■	
23		■		■	24		57			■	25		58	■
■	■	26			■	■	27		■	■		■	28	59
29			■	■	■	60	■	■	30	61		■	■	
	■	■	■	31			62	■	■		■	32	63	
	■	33			■	34			64		■	35		
36			■	■	37		■	38		■	39			■

(संकेत अगले पृष्ठ में)

बाएं से दाएं	ऊपर से नीचे
1. अपने पर भरोसा (05) 2. सही, उचित (02) 3. कम खर्चीला, किफायती (04) 4. हुकुम चलाने वाला (03) 5. विष्णु (02) 6. मेहनत (02) 7. एक राशि (03) 8. नहीं (02) 9. आसपास (04) 10. अभिनेता / फनकार (04) 11. ज्यादा (02) 12. बी ई एल का उत्पाद (04) 13. डर (02) 14. व्याकरण का एक महत्वपूर्ण शब्द (02) 15. कार्य अनुपालन (04) 16. संकटकाल (05) 17. बचाना, एक मंत्रालय (02) 18. सदस्यों का समूह (03) 19. खर्च (02) 20. एक उपाधि, डिग्री (04) 21. लड़ाकू, हमारे उत्पाद .. . . हैं (04) 22. गर्त, गिरावट (03) 23. तबीयत, हालत (02) 24. कयामत (05) 25. स्वामी (03) 26. प्रताड़ित करना (03) 27. हरियाणा की एक जाति (02) 28. पंडित, ब्राह्मण (02) 29. एक विशिष्ट लेखाकार (03) 30. हमारा एक अतिथि गृह (03) 31. पड़ोसी देश (04) 32. गद्य, लेख (03) 33. सहस्त्र (03) 34. तनख्वाह में बढ़ोतरी (05) 35. गंगा की उपनदी (03) 36. अगाध, घोर (03) 37. कल नहीं (02) 38. पहुँचा हुआ, साबित (02) 39. रोकना (03)	1. विदेश से माल खरीदने वाला (04) 2. मानना, स्वीकृति (04) 3. एक देश, मिला हुआ (02) 11. मालूम नहीं (03) 14. पत्र–पत्रिका से संबंधित व्यक्ति (04) 22. लौटना, वापसी (03) 25. एक देवी (03) 26. सौ साल (02) 29. मदद, सहकार (04) 31. उस ओर (02) 32. कंपनी (02) 33. सभी (02) 40. बहुत बड़ा, दीर्घकाय (05) 41. सांस (02) 42. इतिहास, आचार–विचार (03) 44. एक अलंकार (03) 45. उर्दू शायरी, जानवर (02) 46. कमरा (02) 47. फायदा (02) 48. कन्टोनमेंट (03) 49. गोलाकार (03) 50. बी ई एल का उत्पाद (04) 51. सेवक (02) 52. साहित्य की एक विधा (02) 53. उदाहरण (03) 54. एक जलजीव (03) 55. खाली (03) 56. निर्धारित (02) 57. जनता (02) 58. काव्य के रचयिता (02) 59. व्यवस्थापक (04) 60. कागजात (04) 61. खुशहाली (03) 62. नीचा, विनत (02) 63. मेल, संबंध (03) 64. बुजुर्ग (02)

राजभाषा गतिविधियां

कार्पोरेट कार्यालय

गृह मंत्रालय का निरीक्षण

दिनांक 31.03.2023 को सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) व कार्यालयाध्यक्ष (दक्षिण), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा बीईएल कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूरु का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। उन्होंने श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव, सीएमडी / बीईएल से भी मुलाकात की। निरीक्षण बैठक में श्री मनोज जैन, निदेशक (आर एंड डी) तथा निदेशक (मा.सं.) / अतिरिक्त प्रभार, श्री दिब्येन्दु बिद्यांत, स्थानापन्न महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री श्रीनिवास राव, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) और डॉ रहिला राज के एम, अनुवादक उपस्थित थे। सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) ने बीईएल कार्पोरेट कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की विस्तृत समीक्षा की, संबंधित दस्तावेजों को देखा और निर्धारित अनुपालन के अलावा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए की जा रही पहलों की प्रशंसा की।

कृष्णा सोबती हिंदी व्याख्यान माला के तहत दिनांक 08.12.2022 को कार्यस्थल पर महिलाओं के लैंगिक उत्पीड़न की रोकथाम पर तकनीकी व्याख्यान का आयोजन किया गया।

दिनांक 24.02.2023 को क्या ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया जा सकता है? विषय पर स्वामी निखिलानंद, ऑस्टिन, टेक्सास निवासी आध्यात्मिक गुरु द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कृष्णा सोबती व्याख्यान माला के तहत अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 08.03.2023 को लैंगिक समानता के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी विषय पर डॉ. रत्ना जी एन, प्रधान अनुसंधान वैज्ञानिक, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया।

विश्व हिंदी दिवस

दिनांक 10.01.2023 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर कार्पोरेट कार्यालय के कर्मचारियों को विश्व–हिंदी दिवस से संबंधित एक वीडियो दिखाया गया। तदुपरांत, सही शब्द क्या है? प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

बीईएल रक्षा इलेक्ट्रॉनिक शब्दावली

बीईएल और सीएसटीटी, शिक्षा मंत्रालय के विषय विशेषज्ञों द्वारा बीईएल रक्षा इलेक्ट्रॉनिक शब्दावली की 6वीं बैठक बैठक गाजियाबाद में और 7वीं बैठक पंचकुला में संपन्न हुई। अब तक कुल 7070 शब्दों का मानकीकरण कार्य संपन्न हुए।

दिनांक 29.03.2023 को राभाकास बैठक के दौरान सीएमडी ने बीईएल कार्पोरेट राजभाषा द्वारा की गई पहल "बीईएल राजभाषा ज्ञान–कोश" (राजभाषा 501 प्रश्नोत्तरी) का विमोचन किया।

23.11.2022 को नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु के तत्वावधान में अंतर पीएसयू हिंदी प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह और हिंदी–कन्नड़ कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्पोरेट कार्यालय के 13 अधिकारियों / कर्मचारियों को पुरस्कार प्राप्त हुआ।

कोटद्वार यूनिट

दिनांक 06.12.2022 को महाप्रबंधक (मा.सं.), बीईएल मुख्यालय के नेतृत्व में कोटद्वार यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। बैठक में कोटद्वार यूनिट की ओर से महाप्रबंधक (कोट.), यूनिट की राभाकास के सदस्यगण और अपर महाप्रबंधक (मा.सं.) / सी.ओ. तथा सहायक प्रबंधक (राजभाषा) / सी.ओ. ने भाग लिया।

40

बेंगलूरु कॉम्प्लेक्स

विश्व हिंदी दिवस 2023 के उपलक्ष्य में दिनांक 30.12.2022 को राजभाषा विभाग द्वारा कर्मचारियों के लिए 'मुहावरे एवं कहावतें तथा शब्द ज्ञान (गंगा–कावेरी) कन्नड एवं हिंदी भाषा में प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। कुल 65 प्रतिभागियों ने प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए 04 पुरस्कार घोषित किए गए।

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय–भारत सरकार द्वारा राजभाषाई निरीक्षण

दिनांक 16.02.2023 को श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक–क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा राजभाषाई निरीक्षण किया गया। श्री आर पी मोहन, महाप्रबंधक (मा.सं.) की अध्यक्षता में अ.म.प्र (मा.सं.), व.उ.म.प्र. (मा.सं.) तथा एसबीयू/सीएसजी के राजभाषा अधिकारीगण की उपस्थिति में निरीक्षण कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। सहायक निदेशक–क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय ने बीईएल – बीजी में हो रही राजभाषा गतिविधियों एवं प्रदर्शनी के लिए सराहना की।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह– 2023

दिनांक 21.02.2023 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती भामती भट्ट, प्रोफेसर (संस्कृत), बी ई एल महाविद्यालय को आमंत्रित किया गया। समारोह में श्री सुरेश माइकल, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.) तथा श्रीमती हेमा राघवेन्द्र राव, व.उ.म.प्र. (मा.सं.) बी.ई.एल. उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान आठवीं अनुसूची में वर्णित 22 भाषाओं से संबंधी नामित कर्मचारियों ने अपनी मातृभाषा के साहित्य, संस्कृति तथा परम्परा के बारे में अवगत कराया तथा उन्हें स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया।

दिनांक 15.10.2022 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के लिए एसबीयू/सीएसजी मा.सं. विभाग द्वारा विभिन्न अधिकारी एवं समन्वयकों को नामित किया गया। कार्यशाला का संचालन हेतु श्री दामोदरन एम.पी., उप निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना (भाषा), राजभाषा विभाग को संकाय के रूप में आमंत्रित किया गया। "बीईएल में राजभाषा कार्यान्वयन – एक अवलोकन" विषय पर कार्यशाला संचालित की गई। कार्यशाला में कुल 121 कार्यपालक उपस्थित हुए तथा राजभाषा के प्रचार–प्रसार तथा बेहतर कार्यान्वयन के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया।

गाजियाबाद यूनिट

गाजियाबाद यूनिट द्वारा नई पहल के रूप में नवनियुक्त कर्मचारियों हेतु आरंभिक प्रशिक्षण के दौरान राजभाषा नीति, नियम व प्रोत्साहन योजना पर सत्र का आयोजन किया गया।

नराकास के तत्वावधान में दिनांक 31.01.2023 को "एक शाम देश भक्तों के नाम" गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कॉर्पोरेट के राजभाषा पोर्टल "गरिमा" की तर्ज पर राजभाषा पोर्टल 'सुरभि' का निर्माण किया गया।

गाजियाबाद यूनिट को हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु नराकास (उपक्रम), गाजियाबाद द्वारा "राजभाषा शील्ड" प्रदान की गई।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विशिष्ट स्थलों पर बैनर, सूक्तियाँ आदि लगाए गए।

हैदराबाद यूनिट

दिनांक 20.10.2022 को रक्षा मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों की समीक्षा की गई। इस दौरान आयोजित विशेष राकास बैठक में रक्षा मंत्रालय से श्री मनोज कुमार चौधरी, सहायक निदेशक (रा.भा), श्री काले ख़ां, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी (रा.भा), कार्पोरेट कार्यालय से श्री दिब्येंदु बिद्यांता, म.प्र.(मा.सं) एवं श्री श्रीनिवास राव, स.प्र.(रा.भा.) उपस्थित हुए। यूनिट राजभाषा गतिविधियों पर लगाई गई प्रदर्शनी और समीक्षा के आधार पर उन्होंने संतुष्टि जतायी और सकारात्मक सुझाव दिए।

दि.28.10.2022 को नराकास की 56वीं अर्ध वार्षिक बैठक का आयोजन बीडीएल, कंचनबाग में किया गया जिसमें यूनिट से श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक और यूनिट राजभाषा कर्मी उपस्थित हुए। इस दौरान बीईएल टीम को अंतर उपक्रम राजभाषा प्रश्नमंच प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दिनांक 10.01.2023 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एक डॉक्युमेंटरी फिल्म प्रदर्शित की गई।

चेन्नै यूनिट

चेन्नै यूनिट में वर्ष 2021–22 के कुल 15 अधिकारियों / कर्मचारियों को हिंदी प्रोत्साहन योजना (प्रेमचंद एवं जयशंकर प्रसाद) पुरस्कार प्रदान किए गए। यह पुरस्कार कार्मिकों को उनके हिंदी कार्य की शब्द संख्या, कार्य की गुणता के आधार पर दिए गए । पुरस्कार योजना समारोह में महाप्रबंधक सहित सभी विभागीय प्रमुख उपस्थित थे।

यूनिट में दिनांक 07.01.2023 को "कंप्यूटर पर हिंदी यूनिकोड टाइपिंग" विषय पर हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में कुल 17 कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षक द्वारा कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग एवं स्वयं प्रयास से अभ्यास करवाया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में अनुवादक, आयुध वस्त्र निर्माणी, आवड़ी को आमंत्रित किया गया।

नमु यूनिट

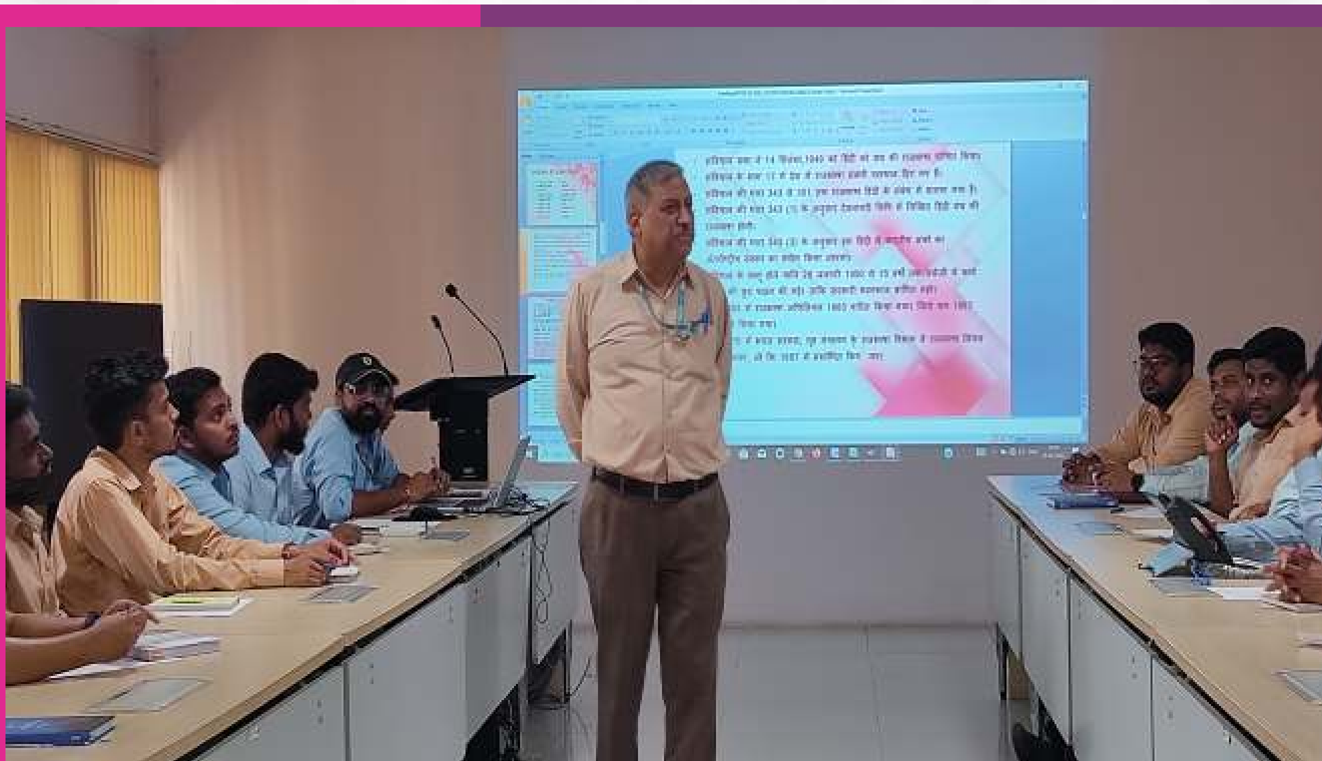

नमु यूनिट में दि.28.12.2022 को कार्यशाला आपके द्वार की तर्ज पर वित्त व लेखा, सामग्री प्रबंधन, विकास व अभियांत्रिकी, गुणता अश्वासन, विपणन, हाईड्रोलिक मास्ट तथा अभियांत्रिकी सेवाएं विभागों में कार्यस्थल पर कार्यान्वयन की समस्याओं का निराकरण, यूनिकोड टंकण तथा अनुवाद सुविधा की जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति, संवैधानिक प्रावधान तथा कंपनी की राजभाषा नीति से परिचित कराया गया। अंत में प्रत्येक विभाग के प्रतिभागियों से एक प्रश्न–पत्र भी हल कराया गया। कार्यशाला में कुल 20 कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला श्री बिमल मोहन सिंह रावत , सहायक प्रबंधक (राजभाषा) बीईएल, पुणे द्वारा संचालित की गई।

नमु यूनिट में दि. 29.03.2023 को प्रशिक्षु अभियंता तथा परियोजना अभियंताओं के लिए प्रबंधन सभा–गृह में एक राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गईं। कार्यशाला में संवैधानिक प्रावधान, कंपनी की राजभाषा नीति से पुनरू परिचित कराया गया। यूनिकोड एवं अनुवाद का अभ्यास कराया गया। कार्यशाला में कुल 26 प्रशिक्षु / परियोजना अभियंताओं ने भाग लिया। कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों से एक प्रश्न–पत्र भी हल कराया गया। कार्यशाला का संचालन श्री बिमल मोहन सिंह रावत, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) बीईएल, पुणे द्वारा किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

1) दि. 27.12.2022 को यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई ।
2) दि. 28.03.2023 को यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई।

पुणे यूनिट

पुणे यूनिट में दि.10.12.2022 को नवनियुक्त अभियंताओं के साथ हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अन्य कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए एक राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गईं। कार्यशाला में नवनियुक्त अभियंताओं को राजभाषा नीति, संवैधानिक प्रावधान तथा कंपनी की राजभाषा नीति से परिचित कराया गया। परिभाषिक शब्द क्या होते हैं तथा उनका प्रयोग कैसे किया जाता है, इस विषय में भी अवगत कराया गया। कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों से एक प्रश्न–पत्र भी हल कराया गया। कार्यशाला में कुल 24 कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला सहायक प्रबंधक (राजभाषा) बीईएल, पुणे द्वारा संचालित की गई।

पुणे यूनिट में दि.30.01.2023 को ई–। श्रेणी, टीसी संवर्ग में पदोन्नत अधिकारियों, हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अन्य कर्मचारियों एवं अधिकारियों तथा कार्यालयों में लिपिकीय कार्य कर रहे संविदा लिपिकों के लिए एक राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गईं। कार्यशाला में ई–। श्रेणी, टीसी संवर्ग में पदोन्नत कर्मचारियों को संवैधानिक प्रावधान, कंपनी की राजभाषा नीति से पुन: परिचित कराया गया। उन्हें यह भी अवगत कराया गया कि ई–। श्रेणी एवं टीसी संवर्ग में पदोन्नत होने के उपरांत राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। कार्याशाला में यूनिकोड और अनुवाद अभ्यास भी कराया गया। कार्यशाला में कुल 24 कर्मचारियों, अधिकारियों तथा संविदा लिपिकों ने भाग लिया। कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों से एक प्रश्न–पत्र भी हल कराया गया। कार्यशाला का संचालन सहायक प्रबंधक (राजभाषा) बीईएल, पुणे द्वारा किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

(1) दि.24.12.2022 को यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई।

(2) दि.24.03.2023 को यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई।

पंचकुला यूनिट

यूनिट में प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। कार्यशाला में बाह्य संकाय के सहयोग से यूनिट में हिंदी प्रयोग से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा तथा समाधान बारे बैठक की जाती है। ऐसी ही एक कार्यशाला का आयोजन दिनांक 15.03.2023 को किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), पंचकुला द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में 'पंचकुला यूनिट' का शानदार प्रदर्शन गत वर्षों की भांति जारी रहा। दिनांक 23.01.2023 को नराकास द्वारा आयोजित अपनी छमाही बैठक में वर्ष 2021–22 के लिए यूनिट को विभिन्न श्रेणी के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग" (सी.एस.टी.टी.) की बैठक

पंचकुला यूनिट मे दिनांक 06 से 10 फरवरी, 2023 तक 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग', शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में आयोग से 5 तथा बी.ई.एल. से 6 विषय विशेषज्ञों ने भाग लिया । समापन समारोह में डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह, सहायक निदेशक (राभा) द्वारा पंचकुला यूनिट द्वारा बैठक हेतु किए गए प्रबंध की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई। बैठक के दौरान श्री श्रीनिवास राव, राजभाषा प्रभारी, बीईएल कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूरु की पुस्तक "परिधान" का मंचासीन गणमान्य व्यक्तियों द्वारा लोकार्पण भी किया गया।

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला-बेंगलूरु

नराकास (उपक्रम), बेंगलूर द्वारा 23 नवम्बर, 2022 को आयोजित संयुक्त हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह में नराकास के कार्यकारी अध्यक्ष एवं बीईएल कॉर्पोरेट के महाप्रबंधक (मा सं) श्री एन विक्रमन के कर कमलों से सीआरएल बेंगलूर के 6 विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। नराकास द्वारा कार्यालय प्रमुखों के लिए आयोजित विशेष हिंदी प्रतियोगिता में श्री एल रामाकृष्णन, मुख्य वैज्ञानिक (सीआरएल) को विजेता के रूप में भारतेन्दु हरिश्चंद्र विजेता पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजभाषा तकनीकी लेख प्रस्तुतीकरण का आयोजन

प्रशासनिक कार्यों के साथ–साथ तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से, विश्व हिंदी दिवस–2023 के उपलक्ष्य में दिनांक 10–11 जनवरी, 2023 को सीआरएल–बीजी द्वारा सीआरएल और पीडीआईसी के कार्यपालकों के लिए हिंदी में तकनीकी लेख प्रस्तुतीकरण संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस प्रस्तुतीकरण में सीआरएल से कुल 9 टीम और पीडीआईसी से कुल 5 टीमों ने हिस्सा लिया।

अधिकारी (राजभाषा) / सीआरएल ने निर्णायक मंडल में शामिल कुल 3 निर्णायकों श्री वीरेंद्र कुमार मित्तल, वरिष्ठ सदस्य अनुसंधान स्टाफ (एआई), श्री शशिकान्त यशवंत चौधरी, वरिष्ठ सदस्य अनुसंधान स्टाफ(डबल्यूसीएनडबल्यू) और श्रीमती चारु एस त्रिपाठी, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (ईओ एंड एल) का स्वागत किया।

निर्णायकों ने सभी प्रतिभागी टीमों को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी और कहा कि तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के माध्यम से तकनीकी विषयों को समझाना और इस पर प्रस्तुति देना सीआरएल के लिए राजभाषा के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि है। इस प्रकार के आयोजन से राजभाषा कार्यान्वयन में एक सकारात्मक परिवेश बनता है और कार्यपालकों में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ती है। मुख्य वैज्ञानिक (सीआरएल) ने हिंदी में इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने और प्रतिभागियों द्वारा किए गए प्रयास की सराहना की और विजेताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया।

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला-गाजियाबाद

नवनियुक्त कर्मचारियों हेतु आरंभिक प्रशिक्षण के दौरान सीआरएल में राजभाषा नीति, नियम व प्रोत्साहन योजना पर सत्र का आयोजन किया गया।

वर्ष 2022 में सीआरएल में पारंगत पाठ्यक्रम की परीक्षा 10 कार्मिकों ने उत्तीर्ण की ।

10 दिसंबर, 2022 को श्री के पी शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा उच्चाधिकारियों को "राजभाषा नीति नियम" पर प्रशिक्षण दिया गया।

दिनांक 20 दिसंबर, 2022 को नराकास की बैठक में सीआरएल, गाजियाबाद को वर्ष 2021–22 में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सीआरएल में "आशुभाषण " प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

आइए, हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें
ಬನ್ನಿ ಹಿಂದಿಯ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಕಲಿತು ಮಾತಾಡೋಣ

आप कभी भी आ सकते हैं।	ನೀವು ಯಾವಾಗ ಬೇಕಾದರೂ ಬರಬಹುದು.	नीवु यावाग बेकादरु बरबहुदु.
मुझे कोशिश करने दीजिए।	ನನಗೆ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡಲು ಬಿಡಿ / ನಾನು ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡುತ್ತೇನೆ.	ननगे प्रयत्न माडलु बिडि / नानु प्रयत्न माडुत्तेने.
कल मुझे इसकी याद दिलाइए।	ನಾಳೆ ಇದನ್ನು ನನಗೆ ಜ್ಞಾಪಿಸಿ / ನೆನಪಿಸಿ.	नाळे इदन्नु ननगे ज्ञापिसि / नेनपिसि.
आपके काम में बहुत सुधार आया है।	ನಿಮ್ಮ ಕೆಲಸ ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿದೆ / ಸುಧಾರಿಸಿದೆ.	निम्म केलस उत्तमगोंडिदे / सुधारिसिदे.
काम बंद न करें।	ಕೆಲಸ ನಿಲ್ಲಿಸಬೇಡಿ.	केलस निल्लिसबेड.
इन कागजों को संभालकर रखें।	ಈ ಕಾಗದಗಳನ್ನು ಹುಷಾರಾಗಿ ಇಡಿ.	ई कागदगळन्नु हुषारागि इडि.
एक मिनट रुको।	ಒಂದು ನಿಮಿಷ ಇರಿ / ಒಂದು ನಿಮಿಷ ನಿಲ್ಲಿ.	ओंदु निमिष इरि / निल्लि.
मुझे सहायता करने का अवसर दीजिए।	ನನಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡಲು ಅವಕಾಶ ಕೊಡಿ.	ननगे सहाय माडलु अवकाश कोडि.
देखेंगे कि आगे क्या होता है।	ಮುಂದೆ ಏನಾಗುವುದೋ ಕಾದು ನೋಡೋಣ.	मुंदे एनागुवुदो कादु नोडोणा.
जाओ और उसे बुलाकर लाओ।	ಹೋಗಿ ಅವನನ್ನು ಕರೆದುಕೊಂಡು ಬಾ.	होगि अवनन्नु करेदु कोंडु बा.
इतनी जोर से न बोलिए।	ಇಷ್ಟು ಜೋರಾಗಿ ಮಾತನಾಡಬೇಡ.	इष्टु जोरागि मातानाड बेडा.
इन निमंत्रण पत्रों को भेज दो।	ಈ ಆಮಂತ್ರಣ ಪತ್ರಿಕೆಗಳನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿ.	ई आमंत्रण पत्रिकेगळन्नु कळुहिसि.
निमंत्रण के लिए आपका अनेकानेक धन्यवाद।	ನಿಮ್ಮ ಆಮಂತ್ರಣ / ಆಹ್ವಾನಕ್ಕೆ ತುಂಬಾ ಧನ್ಯವಾದಗಳು.	निम्म आमंत्रण / आह्वान क्के तुंबा धन्यवादगळु.
आपका निमंत्रण मुझे स्वीकार है।	ನಿಮ್ಮ ಆಮಂತ್ರಣ / ಆಹ್ವಾನ ವನ್ನು ನಾನು ಸ್ವಿಕರಿಸುತ್ತೇನೆ / ಅಂಗೀಕರಿಸುತ್ತೇನೆ.	निम्म आमंत्रण / आह्वान वन्नु नानु स्वीकरिसुत्तेने / अंगीकरिसुत्तेने.
आना न भूलिए।	ಬರಲು ಮರೆಯಬೇಡಿ.	बरलु मरेयबेडि.
कष्ट के लिए खेद है।	ನಿಮಗೆ ತೊಂದರೆಯಾಗಿದಕ್ಕೆ ನನಗೆ	निमगे तोंदरे यागिद्दक्के ननगे
मैं आ न सकूंगा / मैं आने से असमर्थ हूं।	ಬೇಜಾರಾಗಿದೆ / ದುಃಖಃವಾಗಿದೆ. ನನಗೆ ಬರಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದಿಲ್ಲ.	बेजारिदे / दुखःवागिदे. ननगे बरलु साध्यवागुवुदिल्ला.
मैं अवश्य आऊंगा।	ನಾನು ತಪ್ಪದೆ ಬರುತ್ತೇನೆ.	नानु तप्पदे बरुत्तेने.
इस पृष्ठ को जोर से पढ़ो।	ಈ ಪುಟವನ್ನು ಜೋರಾಗಿ ಓದು.	ई पुटवन्नु जोरागि ओदु.

इसका प्रबंध नहीं हो सकता।	ಇದನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಲು / ಏರ್ಪಡಿಸಲು / ಪೂರೈಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ.	इदन्नु निर्वहिसलु / एर्पडिसलु/ पूरैसलु साध्यविल्ला.
क्या मैं आपके साथ शामिल हो सकता हूं?	ನಿಮ್ಮ ಜೊತೆ ನಾನೂ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳಬಹುದೆ?	निम्म जोते नानू सेरिकोळ्ळबहुदे?
मुझे जाने की अनुमति दें। / मुझे जानें दें।	ನನಗೆ ಹೋಗಲು ಅನುಮತಿ ಕೊಡಿ / ಬಿಡಿ.	ननगे होगलु अनुमति कोडि / बिडि.
अब आप जा सकते हैं।	ಈಗ ನೀವು ಹೋಗಬಹುದು.	ईग नीवु होगबहुदु.
क्या मैं आपका फोन इस्तेमाल कर सकता हूं?	ನಾನು ನಿಮ್ಮ ಫೋನ್ ಬಳಸಬಹುದೆ?	नानु निम्म फोन् बळसबहुदे?
क्या मैं आपको गाड़ी में घर छोड़ सकता हूं?	ನಾನು ನಿಮ್ಮನ್ನು ಗಾಡಿಯಲ್ಲಿ ಮನೆಗೆ ಬಿಡಬಹುದೇ ?	नानु निम्मन्नु गाडियल्लि मनेगे बिडबहुदे?
क्या आप अंधेरे से डरते हैं?	ನೀವು ಕತ್ತಲೆಗೆ ಹೆದರುತ್ತೀರಾ? ನಿಮಗೆ ಕತ್ತಲೆ ಎಂದರೆ ಭಯವೇ?	नीवु कत्तलेगे हेदरुत्तीरा? निमगे कत्तले अंदरे भयवे?
क्या मेरी शर्ते आपको मान्य है?	ನನ್ನ ಷರತ್ತುಗಳು ನಿಮಗೆ ಒಪ್ಪಿಗೆಯೇ?	नन्न शरत्तुगळु निमगे ओप्पिगेये?
क्या मैं आपका प्रवेश पत्र देख सकता हूं?	ನಾನು ನಿಮ್ಮ ಪ್ರವೇಶ / ಅನುಮತಿ ಪತ್ರವನ್ನು ನೋಡಬಹುದೆ?	नानु निम्म प्रवेश / अनुमति पत्र वन्नु नोडबहुदे?
बड़े अफसोस की बात है।	ತುಂಬಾ ದುಃಖದ ವಿಷಯ.	तुम्बा दुखःद विषय.
अगली बार अवश्य सफल होंगे।	ಮುಂದಿನ ಸಲ ಖಂಡಿತವಾಗಿ / ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಯಶಸ್ವಿ / ಸಫಲ ನಾಗುತ್ತೀಯ.	मुंदिन सल खंडितवागि / अवश्यवागि यशस्वि / सफल नागुत्तीय.
आपका कोई दोष नहीं।	ನಿಮ್ಮದೇನು ತಪ್ಪಿಲ್ಲ.	निम्मदेनु तप्पिल्ला.
सब ठीक हो जाएगा।	ಎಲ್ಲಾ ಸರಿಹೋಗುತ್ತದೆ.	एल्ला सरिहोगुत्तदे.
इसे कोई टाल नहीं सकता।	ಇದನ್ನು ಯಾರಿಂದಲೂ ತಪ್ಪಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಆಗುವುದಿಲ್ಲ.	इदन्नु यारिंदलू तप्पिसुवुदक्के आगुवुदिल्ला.
हिम्मत से काम लो।	ಧೈರ್ಯದಿಂದ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿ / ಧೈರ್ಯವಾಗಿರಿ / ಧೃತಿಗೆಡಬೇಡಿ.	धैर्यवागिरु / धृतिगेडबेडा.
विश्वास रखो।	ಭರವಸೆ ಇಡು / ಇರಲಿ.	भरवसे इडु / इरलि.
चिंता न करो।	ಚಿಂತಿಸಬೇಡ.	चिंतिसबेडा.
इसमें डरने की बात नहीं है।	ಹೆದರ / ಭಯ ಪಡಬೇಕಾದ ಕಾರಣವಿಲ್ಲ.	हेदर / भय पडबेकाद कारणविल्ला.
तुम्हें किस बात की चिंता है?	ನಿನ್ನ ಚಿಂತೆಗೆ ಕಾರಣವೇನು?	निन्न चिंतेगे कारणवेनु?
हिचकिचाओ मत / झिझको मत।	ಹಿಂಜರಿಕೆ / ಹಿಂಜರಿಯ ಬೇಡ.	हिंजरिके / हिंजरिय बेडा.

अगले अंक में जारी / ಮುಂದುವರೆಯುತ್ತದೆ...

साहित्यकार परिचय

महादेवी वर्मा

26 मार्च, 1907 को होली के दिन फ़र्रुख़ाबाद, उत्तर प्रदेश में जन्मी महादेवी वर्मा हिंदी भाषा की प्रख्यात कवयित्री हैं। महादेवी वर्मा की गिनती हिंदी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभ सुमित्रानन्दन पन्त, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के साथ की जाती है। आधुनिक हिंदी कविता में महादेवी वर्मा एक महत्त्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरीं।

महादेवी वर्मा ने पंचतंत्र और संस्कृत का अध्ययन किया। महादेवी वर्मा कवि सम्मेलन में भी जाने लगी थी, वो सत्याग्रह आंदोलन के दौरान कवि सम्मेलन में अपनी कवितायें सुनाती और उनको हमेशा प्रथम पुरस्कार मिला करता था। महादेवी वर्मा के पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा एक वकील थे और माता श्रीमती हेमरानी देवी थीं। महादेवी वर्मा को 'आधुनिक काल की मीराबाई' कहा जाता है। महादेवी जी छायावाद रहस्यवाद के प्रमुख कवियों में से एक हैं। हिन्दुस्तानी स्त्री की उदारता, करुणा, सात्विकता, आधुनिक बौद्धिकता, गंभीरता और सरलता महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व में समाविष्ट थी। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की विलक्षणता से अभिभूत रचनाकारों ने उन्हें 'साहित्य साम्राज्ञी', 'हिंदी के विशाल मंदिर की वीणापाणि', 'शारदा की प्रतिमा' आदि विशेषणों से अभिहित करके उनकी असाधारणता को लक्षित किया।

महादेवी वर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में हुई। महादेवी वर्मा अपने घर में सबसे बड़ी थी उनके दो भाई और एक बहन थी। 1919 में इलाहाबाद में 'क्रॉस्थवेट कॉलेज' से शिक्षा का प्रारंभ करते हुए महादेवी वर्मा ने 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। तब तक उनके दो काव्य संकलन 'नीहार' और 'रश्मि' प्रकाशित होकर चर्चा में आ चुके थे। महादेवी जी में काव्य प्रतिभा सात वर्ष की उम्र में ही मुखर हो उठी थी।

महादेवी जी कवयित्री होने के साथ–साथ एक विशिष्ट गद्यकार थीं। कवयित्री के अतिरिक्त वे गद्य लेखिका के रूप में भी पर्याप्त ख्याति अर्जित कर चुकी हैं। 'स्मृति की रेखाएं' (1943 ई.) और 'अतीत के चलचित्र' (1941 ई.) उनकी संस्मरणात्मक गद्य रचनाओं के संग्रह हैं। 'श्रृंखला की कड़ियाँ' (1942 ई.) में सामाजिक समस्याओं, विशेषकर अभिशप्त नारी जीवन के जलते प्रश्नों के सम्बन्ध में लिखे उनके विचारात्मक निबन्ध संकलित हैं। रचनात्मक गद्य के अतिरिक्त 'महादेवी का विवेचनात्मक गद्य' में तथा 'दीपशिखा', 'यामा' और 'आधुनिक कवि–महादेवी' की भूमिकाओं में उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा का भी पूर्ण प्रस्फुटन हुआ है। महादेवी वर्मा के 1934 में 'नीरजा', 1936 में 'सांध्यगीत' नामक संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में 'यामा' शीर्षक से प्रकाशित किया गया। महादेवी वर्मा ने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किए। इसके अतिरिक्त उनके 18 काव्य और गद्य कृतियाँ हैं जिनमें 'मेरा परिवार', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'श्रृंखला की कड़ियाँ' और 'अतीत के चलचित्र' प्रमुख हैं। महादेवी वर्मा एक सफल रेखाचित्रकार, कवयित्री, और विचारक है। उन्होंने कई रेखाचित्र लिखें हैं जिनमें नीलकंठ मोर, घीसा, सोना, गौरा आदि काफ़ी प्रसिद्ध हैं।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गईं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिए 'पद्म भूषण' की उपाधि और 1969 में 'विक्रम विश्वविद्यालय' ने उन्हें डी.लिट. की उपाधि से अलंकृत किया। इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिए 1934 में 'सेकसरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाओं' के लिए 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 1943 में उन्हें 'मंगला प्रसाद पुरस्कार' एवं उत्तर प्रदेश सरकार के 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिए उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। महादेवी वर्मा का निधन 11 सितम्बर, 1987 को प्रयाग में हुआ। हिंदी के बारे में उन्होंने कहा था ''हिंदी भाषा के साथ हमारी अस्मिता जुड़ी हुई है। हमारे देश की संस्कृति और हमारी राष्ट्रीय एकता की हिंदी भाषा संवाहिका है।''

बी ई एल कथन गीत

देश की रक्षा अपना फर्ज़ है, भारत की है शान
बी ई एल ! बी ई एल !
भूमि जल हो या हो आसमान,
वीर जवानों के साथ खड़े हरदम,
अंधेरे में भी हम राह को रोशन करें
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !
दशा दिशा का पता बताएं शान से खड़ी रेडारें,
कंधों पर सजते हैं संचार यंत्र हमारे,
जहाज़ हो या अंतरिक्ष यान उनमें तंत्र हमारे,
शिक्षण हो या प्रसारण साथ हैं यंत्र हमारे,
जन जन का सहयोग करें हम,
मतदान को आसान करें हम,
नावू बी ई एल ! मेमू बी ई एल !
आपण बी ई एल ! नांगल बी ई एल !
आमरा बी ई एल ! हम हैं बी ई एल !
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !

68 YEARS IN TRANSFORMING TECHNOLOGY
भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
Bharat Electronics Limited
भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS
QUALITY, TECHNOLOGY, INNOVATION
भारतीय रक्षा बलों का
भरोसेमंद साझेदार
सैन्य संचार
रेडार
तटीय चौकसी प्रणाली
शस्त्र प्रणालियां
वैमानिकी
इलेक्ट्रो ऑप्टिक्स
टैंक अपग्रेड
डिज़िटल मोबाइल रेडियो रिले के लिए सैटकॉम
होमलैंड सेक्योरिटी और स्मार्ट सिटी
गैर-रक्षा
G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE
भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
पंजीकृत व कार्पोरेट कार्यालय – आउटर रिंग रोड, नागवारा, बेंगलूरु – 560 045
टेलीफ़ोन : + 91 80 25039300 | फैक्स : + 91 80 25039291 | टॉल फ्री : 1800 425 0433
सीआईएन : L32309KA1954GOI1000787 | www.bel-india.in
75 आज़ादी का अमृत महोत्सव